RNI No. 26283/74 पंजी. नं. पी.जे./जे.एल.-011/2021-23

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 49, अंक : 47-48   एक प्रति 10 : रुपये
कुल पृष्ठ : 52
सोमवार 19 फरवरी एवं 26 फरवरी 2023
विक्रमी सम्वत् 2079, सृष्टि सम्वत् 1960853123
दयानन्दाब्द : 198   वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab201@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष—49, अंक : 47-48, 19 फरवरी-26 फरवरी 2023 तदनुसार 7-14 फाल्गुन, सम्वत् 2079 मूल्य 10 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक

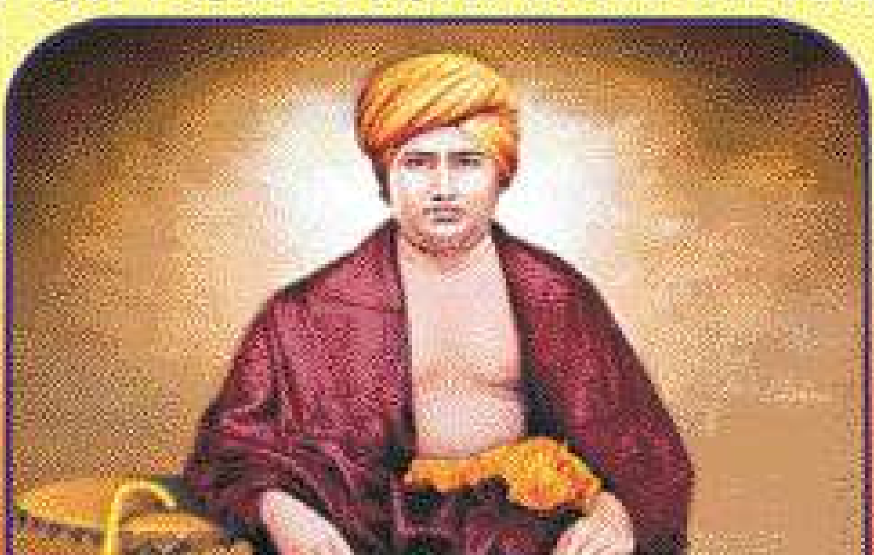

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक, परम ईश्वर भक्त एवं दुनिया में वेदों की पुनर्स्थापना करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में दो वर्ष तक चलने वाले कार्यक्रम का शुभारम्भ भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 12 फरवरी, 2023 को इन्दिरा गांधी इंडोर स्टेडियम नई दिल्ली में किया गया। शुभारम्भ करने से पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी यज्ञ करते हुये। जबकि नीचे चित्र में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी एवं श्री सुरेन्द्र आर्य जी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुये। (नोट: इस कार्यक्रम की कुछक झलकियां प्रकाशित की जा रही है। पूरा विवरण आर्य मर्यादा के आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।)

बोधरात्रि का संदेश

ले.- श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन में सम्वत् 1894 की शिवरात्रि का दिन महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन महर्षि की अन्तर्लीन सत्यान्वेषिणी चेतना ने एक नया मोड़ लिया था। 14 वर्ष के बालक मूलशंकर ने श्रद्धानिष्ठ होकर पिता द्वारा बनाई हुई विधि का पूर्णतया पालन किया। जब अन्य परम्परा प्रेमी श्रद्धालु प्रौढ़जन अपने संकल्प को जागृत न रख सके और एक-एक करके निद्रा देवी की गोद में चले गए तो बालक मूलशंकर अपनी आँखों में पानी के छींटे दे-देकर अपने जागरण व्रत का पूर्णतया पालन करता हुआ अपनी अपार श्रद्धा का परिचय दे रहा था। परन्तु वह श्रद्धा तब कुण्ठित हो गई जब छोटे से चूहे को स्वछन्द वृत्ति से उछल कूद करके शिवजी की मूर्ति पर रखे प्रसाद को खाते देखा। बुद्धि ने बल पकड़ा और सच्चे शिव को जानने की तीव्र इच्छा का उदय हुआ। तदनन्तर अपनी प्रिय बहन तथा चाचा के आकस्मिक निधन ने उस जलती हुई आग में घी का काम किया। परिणामतः रोग, मृत्यु आदि घटनाओं से व्याकुल होकर मूलशंकर ने सच्चे शिव की प्राप्ति तथा मृत्युञ्जय बनने के उद्देश्य से घर छोड़ने का निश्चय किया।

श्रद्धा और मेधा का समन्वय विपरीत परिस्थितियों में भी नवयुग का निर्माण करने वाले मेधावी महापुरूषों का प्रधान लक्षण है। वे प्रत्येक बात को श्रद्धा से स्वीकार करते थे और उसे बुद्धि से तोलते हुए सत्य की ओर उन्मुख होते हैं। ठीक इसी प्रकार बालक मूलशंकर ने श्रद्धानिष्ठ होते हुए भी अपनी मेधा शक्ति को, सत्यासत्य के विवेक को कभी कुण्ठित नहीं होने दिया। सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य के त्यागने की वृत्ति को धारण करते हुए उन्होंने कठोर तपस्या एवं एकाग्रनिष्ठ चिन्तन के उपरान्त सच्चे शिव के स्वरूप को तथा मृत्युञ्जय बनने के उपाय को खोज निकाला। सम्वत् 1894 में हृदयस्थली में बोया हुआ बीज कठोर तपस्या के बाद पल्लवित और कुसुमित होकर समस्त देश को अपनी सुगन्धि से सुगन्धित कर गया। जिससे देश में एक नई क्रान्ति का जन्म हुआ और एक नए युग का सूत्रपात हुआ।

आवश्यकता इस बात की है कि हम इस बोधरात्रि के पावन पर्व पर ऋषि द्वारा उपलब्ध उस बोध के, उस सत्यज्ञान के मूलमन्त्र को समझे और उसके स्वर में स्वर मिलाकर पूर्णनिष्ठा के साथ अपने जीवन का तदनुसार निर्माण करते हुए जनकल्याण के कार्यों में जुट जाएं। महर्षि के उस बोध का प्रथम मूल मन्त्र है-अन्ध श्रद्धालु बनकर मूर्ति पूजा करना छोड़ दो। यह मूर्तिपूजा किसी पत्थर में उत्कीर्ण ब्रह्मा, विष्णु महेश आदि की कल्पित प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा करना मात्र ही नहीं अपितु प्रत्येक ग्रन्थ, परम्परा, रूढ़ि या कर्मकाण्ड के आन्तरिक भाव को बिना बुद्धि के कसौटी पर तोले उसके बाह्य रूप पर टिके रहना भी मूर्ति पूजा ही है। उसे भी त्याग दो। प्रत्येक ग्रन्थ, विचार, परम्परा और कर्मकाण्ड को सत्य की कसौटी पर परखो और उसमें जो सत्य अंश दिखाई दे उसे ग्रहण करो और जो असत्य है उसे छोड़ दो। अपने आपको किसी पूर्वाग्रह या मिथ्याग्रह से ग्रस्त मत समझो। जीवन की सिद्धि सत्यनिष्ठ होने में है, केवल परम्पराओं में नहीं। महर्षि दयानन्द कालिदास के इस वचन का समर्थन करते हैं-

पुराणममित्येव न साधु सर्व, न चापि सर्वं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते, मूढः पर प्रत्ययनेय बुद्धिः।।

महर्षि दयानन्द का दूसरा मूलमन्त्र है- पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। अर्थात् न केवल ब्रह्म ही सत्य है और न केवल प्रकृति ही। बल्कि ये दोनों की सत्य एवं पूर्ण हैं। उस पूर्ण ब्रह्म से उत्पन्न प्रकृति भी पूर्ण है, मिथ्या या असत्य नहीं। अतः जीवधारी मानव को ऋतावान् एवं ऋतावृधः बनकर इन दोनों के लाभ को प्राप्त करने का यत्न करना चाहिए। तभी जीवन की सफलता है। केवल योग या ज्ञानमार्ग द्वारा ही परमात्मा का साक्षात्कार नहीं होता, अपितु करूणामय होकर कर्मयोग द्वारा समाज का कल्याण करना, उसमें सत्य और न्याय प्रतिष्ठित करके उसे सत्यम् शिवम् सुन्दरम् बनाना भी शिव की उपासना का एक प्रकार है। यह सच्चे शिव की प्राप्ति का एक सुन्दर सोपान है। इसी कारण संसार के प्राणियों की उपेक्षा करके केवल आत्मलाभ के लिए किसी पर्वत कन्दरा के अन्दर सतत ब्रह्मलीन रहने की अपेक्षा ऋषि ने ईश्वर को साक्षी रखकर जनमानस में सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करने के लिए और उसके निमित्त अपने जीवन की बलि देना भी स्वीकार किया।

ऋषि की दृष्टि में आजकल के भौतिक विज्ञान के उत्कर्ष के युग में भोग तृष्णा के संलिप्त तथा असत्य एवं अन्याय से पीड़ित समाज को उससे मुक्त करना सच्ची शिव पूजा है। वैसे तो जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः इस ध्रुव सत्य के अनुसार सभी को एक न एक दिन शरीर त्याग कर मृत्यु की गोद में जाना ही है और उस कार्य के लिए चाहे कितना दुःख प्राप्त करना हो, चाहे प्राण भी चले जाएं, परन्तु अपने इस मनुष्य धर्म से पृथक न होना ही मृत्युञ्जय पद को प्राप्त करने की अचूक औषध है।

यदि हम इस बोधरात्रि के दिन ऋषि के उस संदेश को जो उन्होंने कठोर तपस्या एवं साधना के उपरान्त प्राप्त बोध के अनन्तर हमें दिया। उनके द्वारा दिए गए बोध को समझ कर अपने देश के धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में व्याप्त असत्य व अन्याय को दूर करके सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करने के लिए अपनी-अपनी शक्ति के अनुरूप सहयोग करें तभी इस बोधरात्रि को मनाने की सार्थकता है, परन्तु इसके लिए हमें स्वयं सत्यनिष्ठ तथा जाति, धर्म वर्ण आदि के भेदभाव से मुक्त होकर सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना को अपनाना होगा। केवल शिवरात्रि के दिन आर्य समाज में बोध पर्व मनाने से हमें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। हमें इस बोध पर्व को जन जागरण अभियान बनाना होगा।

ऋषि दयानन्द-बोधरात्रि

लेखक-श्री प्रेम कुमार महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

18 फरवरी 2023 को हम ऋषि दयानन्द बोध दिवस मनाएंगे। शिवरात्रि का दिन भारतवासियों के लिए सौभाग्य की रात थी। इस रात्रि के प्रभाव से एक बार ज्वलन्त दैवी प्रकाश हुआ जो न केवल भारत का ही अपितु सारे संसार के अन्धकार और दु:ख के नाश करने का कारण बना। इस बोधरात्रि ने भारत तथा विश्व में महर्षि दयानन्द द्वारा जो जागृति उत्पन्न की वह किसी से छिपी नहीं है। यह जागृति सत्य की जागृति थी। इस रात्रि ने सबसे बड़ा पाठ यह पढ़ाया कि अन्धविश्वासों को छोड़कर अपनी बुद्धि और ज्ञान से प्रत्येक नर-नारी को काम करना चाहिए। यदि समस्त देशवासी तथा संसार के लोग यह निश्चय कर लेवें कि जो बात सत्य है उसी को हम मानेंगे और जो बात बुद्धि, ज्ञान और सृष्टि नियमों के विपरीत है उसको कभी नहीं मानेंगे तो संसार का दु:ख और वैमनस्य दूर हो जाए। महर्षि दयानन्द ने बोध प्राप्त करके संसार को जो मार्ग दिखाया है वह मार्ग हमारे लिए प्रेरणादायक है।

महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र की उन्नति के लिए यह आवश्यक समझा कि सबके धार्मिक विचार एक से होवें और वे विचार सृष्टि नियम, बुद्धि तथा वेदज्ञान के अनुकूल होवें। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि किसी जाति की राजनैतिक व्यवस्था, उसके धार्मिक विचार एवं पारस्परिक व्यवहार के गठन पर निर्भर रहती है। जिस जाति के धार्मिक विचार ऊंचे हों, जिसका आचार-विचार उत्तम और जिसके पारस्परिक व्यवहार में सच्चाई और प्रेम हो उसकी राजनैतिक व्यवस्था भी श्रेष्ठ होगी और किसी अन्य जाति को उस पर राज करने का साहस नहीं होगा। भारत को उच्च बनाने का उन्होंने आर्य समाज को साधन बनाया और उच्च बनाने के सभी साधनों का प्रचार किया। स्वराज्य मिल जाने पर आर्य समाज को देश की राजनैतिक व्यवस्था को दृढ़ एवं उत्तम बनाए रखने के लिए लोगों के आचार विचार और पारस्परिक व्यवहार को सही दिशा में बनाए रखने का विशेष कार्य करना है। महर्षि द्वारा प्रदर्शित वेद मार्ग ही एक मात्र मार्ग है जो मानव मात्र को एक जगह एकत्र कर सकता है और एक दूसरे के वैमनस्य को दूर कर सकता है। ऐसे महान् गुरू की शिक्षा को कभी न भुलाना चाहिए और जिन लोगों के हृदय में सत्य को जानने और परोपकार करने की लग्न है उनको तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए।

शिवरात्रि की रात को हिन्दू तो पवित्र मानते ही हैं परन्तु उन सबके तथा उन लोगों के लिए भी जो महर्षि दयानन्द को अपना शिक्षक मानते हैं यह आवश्यक है कि इस रात्रि को स्वामी जी महाराज के सिद्धान्तों पर विचार करें। सत्य और ईश्वर में आस्था रखते हुए आत्मा को बलवान बनाएं और अन्धविश्वास और असत्य की लहरों से हमेशा बचें। इस दिन प्रत्येक आर्य को शान्त भाव से आत्म निरीक्षण करके अपनी त्रुटियों को दूर करने और आर्य समाज की उन्नति में योगदान देने का संकल्प करना चाहिए। आज देश और संसार को महर्षि दयानन्द जैसे महान् पुरूषों की नितान्त आवश्यकता है जो राष्ट्र का सही मार्गदर्शन कर सकें। धार्मिक और सामाजिक उत्थान के बिना राजनैतिक उत्थान सम्भव नहीं है। महर्षि की दिव्य दृष्टि ने इस तथ्य को भली भांति देख लिया था। तभी तो जब उनसे प्रश्न किया गया कि भारत का उद्धार किन उपायों से हो सकता है तो उन्होंने कहा था कि जब तक देश और समाज के लोगों का एक धर्म, एक भाषा और एक समान सुख-दु:ख की अनुभूति नहीं होती तब तक समाज की उन्नति और उसका योगक्षेम भली भांति सिद्ध नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द सरस्वती देश की राजनैतिक एकता के लिए विदेशी शासन का अन्त और स्वराज्य की स्थापना के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे। धार्मिक एकता के लिए वे भूमण्डल में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार और प्रभुत्व देखना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने संसार को वेदों की ओर चलने का आह्वान किया और मत-मतान्तरों पर प्रबल प्रहार किया। सामाजिक एकता के लिए उन्होंने कुरीतियों और विविध बुराईयों का खण्ड़न करके समाज सुधार का प्रशंसनीय कार्य किया।

सामाजिक एकता के मार्ग में जन्मना जात-पात का बड़ा भयंकर रोड़ा है। इसके रहते सामाजिक राजनैतिक अभ्युत्थान के कार्य में आशानुरूप प्रगति होना सम्भव नहीं है। महर्षि दयानन्द ने जात-पात की भावना को मिटाने और गुण कर्मानुसार मानव की योग्यता का निरूपण करने का सिद्धान्त दिया। सांस्कृतिक एकता के लिए देश में समान भाषा की आवश्यकता पर बल दिया। समान भाषा की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने स्वयं गुजराती होते हुए भी अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी और संस्कृत में लिखे। महर्षि दयानन्द ने लोगों के आर्थिक विकास के लिए गोरक्षा पर विशेष बल दिया। यदि हमारे देश के कर्णधार तुष्टिकरण का अवलम्बन किए बिना हिन्दी भाषा के प्रचलन और गौहत्या निषेध के लिए कटिबद्ध हो जाए तो देश का बहुत कल्याण हो सकता है। महर्षि दयानन्द को श्रद्धाजंलि प्रस्तुत करते हुए पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधा कृष्णन् ने कहा था कि जब देश पर संकट के बादल छाए हुए हों तब हमें शत्रु की चुनौती को स्वीकार करके उस शिक्षा को याद करना है जो महर्षि दयानन्द ने हमें दी है। स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिकारी महापुरूष तो थे ही साथ ही उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फैंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओं का हमारे लिए बहुत महत्त्व है।

शिवरात्रि के इस पर्व को आर्य समाज में ऋषि बोधोत्सव के रूप में मनाया जाता है और ऋषि महिमा का गुणगान किया जाता है। शिवरात्रि को बोधोत्सव के रूप में मनाना हमारे लिए तभी फलदायक सिद्ध होगा जब हम महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करेंगे। वेद की सार्वभौम शिक्षाओं को जन-जन में प्रचारित करते हुए अन्य मत-मतान्तरों और कुरीतियों को समाज से दूर भगाने की कोशिश करेंगे।

यथार्थ बोध

लेखक- श्री सुधीर शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

सूर्य उदय होता है तो रात्रि का बीजारोपण प्रारम्भ हो जाता है, रात्रि हर रोज आती है और सूर्य के उदय होते ही चली जाती है। परन्तु हम फाल्गुण वदी 14 की रात्रि के महत्त्व के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मतावलम्बियों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। अपने पौराणिक भाई इस शिवरात्रि को इसलिए अधिक महत्त्व देते हैं कि इस दिन शिव ने सृष्टि की उत्पत्ति की थी और प्रलय भी इसी दिन करेगा। इसलिए इस भयंकर समय को टालने के लिए शिव के उपासक शिव की आराधना करते हैं। आर्य समाज में इस शिवरात्रि को बोध रात्रि के रूप में मनाते हैं, क्योंकि आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को इसी शिवरात्रि के दिन सच्चे शिव का ज्ञान हुआ था। यदि सच कहा जाए तो आर्य समाज की स्थापना केवल चूहे के कारण ही हुई जिसको देखकर मूलशंकर ने ज्ञान प्राप्त किया और उनके हृदय में सच्चे शिव को प्राप्त करने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। शिवरात्रि की इस घटना से तो आर्य बन्धु अवगत ही हैं कि मूलशंकर के पिता शिव के उपासक थे और अपने पुत्र को भी शिव का उपासक बनाना चाहते थे। इसलिए शिवरात्रि के व्रत की महानता बताकर मूलशंकर को व्रत रखने के लिए बाध्य किया। मूलशंकर को भी शिव के दर्शन करने की आकांक्षा थी। अत: वह उसको प्राप्त करने के लिए शरीर के कष्टों को सहकर भी जागता रहा। परन्तु मूलशंकर कुछ ही क्षणों में देखता है कि जिस शिव के वह दर्शन पाना चाहता था उसी शिव पर एक छोटा सा चूहा आकर उछल कूद मचा रहा है तथा उसके नैवेद्य को भी खा रहा है। लेकिन वह शिव अपनी रक्षा के लिए हिल भी नहीं रहा था। तब मूलशंकर के मन में एक ज्ञान की किरण जागी, फिर उसने विचार किया कि जिस शिव ने सारे संसार को उत्पन्न किया, जो सारे संसार का पालन करता है वह शिव और ही है। इसी धारणा को मन में लेकर मूलशंकर उसकी खोज में आगे बढ़ा। जहां-जहां पर भी उन्हें पता चला कि अमुक तपस्वी योगी या ऋषि सच्चे शिव के दर्शन करा सकता है, अनेकों कष्ट उठाकर भी उस व्यक्ति तक जाने की चेष्टा की। अन्त में इसी प्रकार विचरते हुए मथुरा के एक तपस्वी योगीनिष्ठ ऋषि की प्राप्ति हुई तथा उनके चरणों में बैठकर सच्चे शिव के रहस्य को जानकर ज्ञान प्राप्त किया।

महर्षि दयानन्द ने गुरु स्वामी विरजानन्द से सच्चे शिव का ज्ञान प्राप्त करके सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए जिन सिद्धान्तों की नींव ड़ाली, जिन लुप्त परम्पराओं को जगाया उसी के परिणाम स्वरूप आर्य समाज की स्थापना हुई। महर्षि दयानन्द जी शिवरात्रि का व्रत न रखते तो उन्हें सच्चे शिव को प्राप्त करने के लिए प्रेरणा भी नहीं मिलती और न ही आर्य समाज की स्थापना होती। महर्षि दयानन्द जी उस शिवरात्रि को स्वयं जगे और बाद में अपना सारा जीवन दूसरों को जगाने में लगा दिया। जो चिंगारी उनके हृदय में उस शिवरात्रि को प्रज्जवलित हुई थी उस चिंगारी को उन्होंने बुझने नहीं दिया। अनेकों पर्वतों, कन्दराओं, गुफाओं में जाकर उन्होंने उस चिंगारी को खूब प्रज्जवलित करने का प्रयास किया और बुझने के स्थान पर उन्होंने उसे उसी प्रकार जलाए रखा। गुरू विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर उनकी सारी शंकाओं का समाधान हो गया। जिस प्रकार का ज्ञान महर्षि दयानन्द जी प्राप्त करना चाहते थे, उस ज्ञान की प्राप्ति उन्हें गुरू विरजानन्द की कुटिया में प्राप्त हुई। गुरू विरजानन्द ने आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से उनके अन्दर के संशयों को मूल रूप से नष्ट कर दिया। जिस शिव को जानने के लिए उन्होंने घर को त्याग कर जंगल का रास्ता पकड़ा था, उसका यथार्थ बोध उन्हें उनके चरणों में बैठकर प्राप्त हुआ। अगर उस शिवरात्रि को महर्षि दयानन्द सो जाते तो भारत का भाग्य सो जाता। वे स्वयं जगे और सारे देश को जगा दिया। लोग वेदोक्त मार्ग को भूल कर अन्य मत-मतान्तारों में जकड़े हुए थे। समाज में पाखण्ड़ और अन्धविश्वास के कारण अनेक प्रकार की कुरीतियां बढ़ रही थी। ऐसी परिस्थिति में महर्षि दयानन्द ने गुरू विरजानन्द से जो आर्ष ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त किया था, उसी ज्ञान से उन्होंने लोगों को बताया कि वेदों में कहीं पर भी मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। अपने सम्पूर्ण जीवन में वे इसी प्रकार वेदों के प्रचार का कार्य करते रहे। उन्होंने अपनी संस्कृति, सभ्यता और मातृभाषा को अपनाने पर जोर दिया। परिणामस्वरूप देश में एक नई क्रान्ति का उदय हुआ और लोगों में अपने देश के प्रति स्वाभिमान की भावना पैदा हुई। यह सब उस शिवरात्रि के कारण हुआ जिस रात्रि को महर्षि दयानन्द ने जागरण किया।

बोध रात्रि हर वर्ष आती है और चली जाती है। परन्तु इस बोध रात्रि का क्या अभिप्राय है, यह कभी हमने सोचा भी नहीं, अगर आज हम सभी इस रात्रि के महत्त्व को समझ लें तो हमें भी मूलशंकर की तरह बोध प्राप्त हो सकता है और यह रात्रि हमारे लिए भी बोध रात्रि बन सकती है। इस शिवरात्रि के उपलक्ष्य पर हमें देखना होगा कि आर्य समाज मे लोगों की संख्या में कमी क्यों आई है? यह बोध पर्व हमारे लिए केवल बोध पर्व नहीं अपितु चिन्तन पर्व होना चाहिए। इस दिन हमें चिन्तन करना चाहिए कि जिन उद्देश्यों के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी, क्या हम उन उम्मीदों पर खरा उतर रहे हैं। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने उस रात्रि को बोध प्राप्त किया था उसी प्रकार हम भी महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़कर उनके जीवन से सच्चे शिव को प्राप्त करने का संकल्प ले सकते हैं। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम जागना चाहते हैं, यथार्थ बोध प्राप्त करना चाहते हैं या फिर सोना चाहते हैं अथवा ज्ञान प्राप्त ही नहीं करना चाहते हैं। यदि हम थोड़ा सा भी चिन्तन करेंगे और आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करेंगे तो हमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी और यथार्थ बोध भी प्राप्त होगा।

आज की शिवरात्रि फिर सन्देश लाई है

लेखक-श्री अशोक परूथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

टंकारा के एक छोटे से शिव मन्दिर में घटी चूहे वाली घटना इतनी प्रसिद्धि पा चुकी है कि उसके दोहराने की आवश्यकता नहीं है। यह कोई विशेष घटना नहीं थी फिर भी यह घटना संसार की अन्य घटनाओं में विशेष स्थान रखती है। इसका कारण यह है कि इस घटना ने विश्व को एक नई दिशा दी। ऐसी घटनाएं फिर किसी शिवालय में न घटी हो ऐसी बात भी नहीं पर बाकी घटनाएं ऐसी दिशा बोध देने वाली घटना नहीं बन सकी। कारण कि न तो कोई उस घटना से दिशाबोध देने वाला और न ही दिशा बोध लेने वाला महर्षि दयानन्द सरीखा अन्य कोई संसार में उत्पन्न हुआ है। अगर देखा जाए तो शिवरात्रि की घटना अत्यन्त सामान्य होते हुए भी अति क्रान्तिकारी घटना थी और क्रान्ति की अपनी यह विशेषता मानी गई है कि वह छोटी-छोटी बातों से उत्पन्न हुआ करती है। इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है। पर इस घटना में छिपी क्रान्ति की बात कुछ और ही थी जिसके लिए किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

एक मूषक ने जमाया उग्र ऊहापोह,
जन्म के संग क्रांति लाया सत्य का विद्रोह।।

वस्तुतः यह घटना ऐसी थी कि जिस से समस्त दिशाओं ने एक तीव्रतर सुधारात्मक मोड़ लिया। सत्य की खोज के लिए बालक मूलशंकर रात भर जगा था। यह उसका जागरण एक अद्‌भुत एवं अनोखा जागरण था। ऐसा जागरण कि जिसके लिए कवि ने कहा कि-

तुम जगे ऐसे कि फिर सोए नहीं पल भर।
प्रातः लाया रात भर का जागरण ऋषिवर।।

पर क्या मूलशंकर का वह जागरण केवल उसी रात्रि तक ही सीमित था? नहीं वह तो सदा-सदा के लिए जग गया था और यदि हम कहें कि उसके बाद फिर ऋषि कभी सो ही नहीं पाया तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी और सत्य तो यह है कि वे स्वयं ही नहीं जगे बल्कि सारे संसार को जगा गए।

किसके लिए था ऋषि का यह जागरण? आज की शिवरात्रि यही बताने आई है। क्यों जगा था वह और क्यों जगाया था उसने संसार को? यही आज हम सबका चिन्तन होना चाहिए। और फिर क्यों वह वर्षो वनों, पर्वतों की खाक छानता रहा? क्योंकर उसने इतने कष्ट उठाए? शिव की पिण्ड़ी पर चूहे को चढ़ते तो औरों ने भी देखा था फिर मूलशंकर को कौन सी ऐसी बात दिल को लगी जो और न महसूस कर सके? यही चिन्तन का विषय है। शिवरात्रि का पर्व हर वर्ष यही बताने के लिए आता है।

शिवरात्रि की उस रात को मूलशंकर ने वह सत्य देखा जो विरले देख पाते हैं और वह भी इसलिए देख पाया कि वह रात भर जागता रहा, सर्वात्मना जागता रहा, तभी वह सत्य के दर्शन कर सका। लोग जग कर भी नहीं जगते अतः वे सत्य के दर्शन भी नहीं कर पाते है और जो सो जाते हैं उनका तो कहना ही क्या? इसीलिए कहा है कि जो जागत है सो पावत है, जो सोवत हैं सो खोवत हैं। शिवरात्रि के इस पर्व पर पौराणिक बन्धु जागरण कर रातभर जगते रहने का उपक्रम करते हैं, पर उनका आत्मा तो जगता ही नहीं है। इसलिए वे सत्य के दर्शन नहीं कर पाते। बालक मूलशंकर का आत्मा जगा था तभी सच्चे शिव के दर्शन करने में वह सफल हो सका। मूलशंकर ने सभी सोए लोगों को उठाया और कहा कि यह तो सच्च शिव प्रतीत नहीं होता। लोग उस पर हंस दिए। पिता ने उनकी शंकाओं का समाधान करने का प्रयास किया परन्तु क्या सत्य कहीं दबने वाला होता है? वह सच में प्रकट होकर ही रहा।

शिवरात्रि की घटना मूलशंकर को सच्चा आस्तिक बना गई। यह वह घटना थी जिस पर सुधार का भव्य भवन खड़ा किया गया जिसका नाम आर्य समाज पड़ा। आर्य समाज का यह दायित्व है कि वह महर्षि के दिव्य संदेश को घर-घर तक पहुंचाए। आर्य समाज स्वयं जगे और संसार को जगा दे। शिवरात्रि का पर्व हर वर्ष यही प्रेरणा देने के लिए आता है कि हम महर्षि दयानन्द के सन्देश को घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास करें। आज से पूर्व भी ऐसी एक शिवरात्रि की रात आई थी जिस रात को मूलशंकर ने मूल से अपना सफर शुरू किया था और उच्च शिखर पर पहुंचे। यह पर्व हर वर्ष हमारे सामने यह प्रश्न खड़ा कर देता है कि हमने पिछले वर्ष में क्या किया है। क्या हम केवल बोधोत्सव का पर्व मनाकर महर्षि दयानन्द का गुणगान करके अपने कर्त्तव्य का पालन कर लेते हैं? आज आवश्यकता है कि आर्य समाजें अपने-अपने दायित्व को पहचानें, अपनी सीमा-सामर्थ्य पर विचार करके आज की समस्याओं से मोर्चा लेने के लिए इसी पावन पर्व पर दृढ़ संकल्प हो। वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार हो, यही आर्यजनों का परम लक्ष्य है। हम ऋषि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करते हुए आर्य समाज के लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए कृतसंकल्प हो जाएं।

ऋषि दर्शन

लेखक- पं. चमूपति जी एम. ए.

जन्म-ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि होने का गौरव गुजरात प्रान्त को है। पिता जन्म के ब्राह्मण थे, और भूमिहारी तथा जमींदारी का कार्य करते थे। शिव के बड़े भक्त थे। शिवरात्रि के दिन बालक को मन्दिर में ले गए और उसे उपवास करा जागरण का आदेश दिया। जब बड़े-बड़े शिव भक्त सो गए, यह भावी ऋषि प्रयत्न पूर्वक जागता रहा। गीता के कथनानुसार

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। अ. 2,69

शिवरात्रि-इनके हृदय में भक्ति का नया भाव उदय हुआ था। वे इसी रात में शिव को रिझा देना चाहते थे। नींद आती पर यह पानी के छींटों से उसे दूर भगाते। इतने में एक चूहे ने सचेत किया। उस क्षुद्र पशु को महान् पशुपति के आगे उद्धत होता देखकर विचार आया 'हो न हो, यह शिव नहीं।' दूसरों का व्रत भंग आलस्य ने किया था इनका तर्क ने। तर्क जीवन की भूमिका थी, आलस्य मौत की। शिवरात्रि बीत गई, परन्तु शिवरात्रि की घटना हृदय में गड़ सी गई।

मृत्यु के दृश्य-मूलशंकर के बढ़ते यौवन को दूसरी चेतावनी अपने चाचा और भगिनी की मृत्यु से मिली। चाचा के लाडले थे, उनका वियोग सहा न जाता था। भगिनी को महामारी ने मारा। इन दो मृत्युओं का प्रभाव एक सा नहीं हुआ। प्रथम मृत्यु पर आश्चर्य चकित रहे और पाषाण हृदय की उपाधि पाई, दूसरी पर बिलख-बिलख कर रोए।

शिक्षा और गृहत्याग-मूल शंकर की शिक्षा का प्रबन्ध इनके बाल्यकाल में किया गया था। इन्हें यजुर्वेद कण्ठस्थ था तथा और भी बहुत कुछ पढ़ा लिखा करते थे। पिता को पता लगा कि बालक पर वैराग्य का भूत सवार है। महात्मा बुद्ध के पिता की तरह इनके पिता ने भी इन्हें विवाह की डोरों में फांसने की ठानी परन्तु विवाह से पूर्व ही मूल शंकर घर से लुप्त हो गए।

वन यात्रा-मूलशंकर की वनयात्रा की कथा बहुत लम्बी है। पहले तो किसी ने ठग लिया। इन्हें शुद्ध चैतन्य नाम देकर नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनाया। फिर वह संन्यासी हुए और दयानन्द नाम पाया। योगियों के पास योग साधना सीखते रहे। समाधि का आनन्द लाभ किया। गिरि-गुहाओं में घण्टों बिताए। पुस्तकें खोजी और उनका अध्ययन किया। मैदानों में सोए, वृक्षों की शाखाओं में विश्राम किया। मूल कन्द खाकर भूख मिटाई। सार यह कि पूर्ण वनचर का सा जीवन व्यतीत किया।

गुरु विरजानन्द के चरणों में-36 वर्ष से ऊपर के थे जब दंडी विरजानन्द के द्वार पर विद्या-वित्त के भिक्षु हुए। वहां पहली भेंट यह धरनी पड़ी कि जो पुस्तकें पढ़ी हैं सब यमुना मैय्या के अर्पण करो। हाथ-लिखे पुस्तक बड़ी कठिनता से हाथ आए थे। पर ये गुरु-मुख का उपदेश भी तो सुलभ न था। जी कड़ा किया और गुरु की आज्ञा पालन की। आदर्श शिष्य आदर्श गुरु के चरणों में आदर्श शिक्षा प्राप्त कर रहा था। नित्य प्रति यमुना के जल से गुरु जी को स्नान कराते। कुटी में झाड़ू देते, गुरु की सेवा सुश्रूषा करते। गुरु ने एक दिन डण्डे से ताड़ना की, यतिवर ने गुरु-गौरव का प्रसाद मान स्वीकार की। अन्त में दीक्षान्त का समय आया। निर्धन ब्रह्मचारी गुरुदक्षिणार्थ लौंगों की भीख मांग लाया। हा दैव! स्वीकार न हुई। 'क्या भेंट धरूं?' 'जो तुम्हारे पास हो।' मेरे पास मेरे अपने सिवा कुछ नहीं। तो अपना आप भेंट करो। भेंट धरी गई। गुरु ने अंगीकार की। वही अपने आपकी भेंट मानो आर्य समाज की स्थापना का प्रथम बीज थी। दयानन्द विरजानन्द का हुआ और विरजानन्द के हाथों सारे संसार का।

पाखण्ड-खण्डनी-अब पुष्कर के मेले में दयानन्द पहुंचता है, हरिद्वार में कुम्भ के महोत्सव में दयानन्द गरजता है। वेद से उल्टे जाते वैदिक धर्मियों को वेद के पथ पर लाना चाहता है। एक ओर सारी भ्रान्त आर्य जाति है, दूसरी ओर अकेला दण्डधारी दयानन्द। 'पाखण्ड खण्डनी पताका' के नीचे खड़ा कौपीनधारी ब्रह्मचारी आते जाते के लिए अचम्भा था। लोग कहते थे, गंगा के प्रवाह को रोकने का सामर्थ्य इसमें कहां ? स्वयं भगीरथ आएं तो न रोक सकें।

तपस्या की पराकाष्ठा-ऋषि गरज गरज कर हार गए। गंगा बहती गई और उसके साथ हिन्दू भ्रान्तियों का प्रवाह भी बहता गया। ऋषि ने डेरा डण्डा उठाया और वनों की राह ली। पूर्ण वीतराग होने का व्रत किया कि कौपीन के अतिरिक्त कोई चीज़ पास न रखेंगे। महाभाष्य की एक प्रति पास थी, सो भी गुरुवर की सेवा में भेज दी। इसी कौपीन में दयानन्द सोते, इसी में फिरते। नहाकर इसे सूखने को डालते और स्वयं पद्मासन लगाकर बैठे रहते। हिमाछन्न नालों में क्या और जलती रेतों पर क्या दयानन्द का यही पहरावा रहा।

शास्त्रार्थ-कोई दो वर्ष दयानन्द ने इस प्रकार तितिक्षा में काटे। फिर प्रचार में प्रवृत्त हुए। शास्त्रार्थ पर शास्त्रार्थ करते चले गए। हीरा वल्लभ नाम के एक प्रौढ़ पण्डित ने सप्ताह भर संस्कृत में शास्त्रार्थ

किया। उनका संकल्प था कि ऋषि से मूर्ति को भोग लगवा कर उठूंगा। ऋषि का पक्ष सुना तो ठाकुर जी को उठा कर गंगा में प्रवाहित किया और मुक्तकंठ से माना कि मूर्ति-पूजा शास्त्र विरुद्ध है।

ऋषि के उपदेश में जादू था। कंठियां उतरवा दी, मूर्तियां फैंकवा दी, तिलक छाप की रीति मिटा दी। गायत्री का प्रचार किया। सन्ध्या लिख लिख कर बांटी। स्त्रियों को मन्त्रजाप का अधिकार दिया। जाटों, राजपूतों को यज्ञोपवीत पहनाए।

आर्य धर्म की जय-चान्दपुर के शास्त्रार्थ में ऋषि ने आर्य जाति के इतिहास में एक नए युग का बीजारोपण किया। आर्य आर्य तो आपस में विवाद करते ही थे। मुसलमान, ईसाइयों से इनकी कभी न ठनी थीं। इससे पूर्व प्रथा यह थी कि अहिन्दू हिन्दुओं का खण्डन करें और हिन्दू चुप रह कर सहन करते जाएं। आर्य धर्म आटे का दीया था। कच्चा धागा था, ऋषि ने इस भ्रान्ति को मिटा दिया। तीन दिन बाद शास्त्रार्थ होना था जिस में मौलवियों और पादरियों के विरुद्ध ऋषि ने आर्य धर्म का पक्ष लेना स्वीकार किया था। एक ही दिन में ऋषि ने आर्य धर्म की स्थापना ऐसी दृढ़ता से की कि दूसरे दिन वहां प्रतिपक्षियों का चिन्हमात्र भी शेष न था। आर्य धर्म की यह विजय धर्म के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।

अन्य मत वालों पर कृपा-ऋषि ने ईसाइयों को निमन्त्रण दिया, मुसलमानों को निमन्त्रण दिया, कि आर्य धर्म को परखो और स्वीकार करो। इस निमन्त्रण में मोहनी शक्ति थी। सर सैय्यद ऋषि के चरणों में आते। पादरी स्काट ऋषि के दर्शन करते। पादरी को ऋषि 'भक्त स्काट' कहते। 'भक्त' की अनुपम उपाधि किसी आर्य समाजी को न मिली, एक ईसाई ऋषिभक्त का यह अपूर्व प्रसाद ले गया। मुहम्मद उमर जन्म का मुसलमान था। उसे ऋषि ने अपने हाथों आर्य बनाया और अलखधारी नाम रखा। सारे संसार के लिए आर्य धर्म का द्वार खोलने का श्रेय वर्तमान युग में ऋषि दयानन्द को ही है। कर्नल अल्काट और मैडम ब्लेवास्टकी अमेरिका से चलकर ऋषि दयानन्द के चरणों में आए। अपने पत्रों में ऋषि को 'गुरुदेव' कहकर सम्बोधित करते थे।

बन्धन काटने वाले-एक दिन एक ब्राह्मण ने पान का बीड़ा ला दिया। चबाने से प्रतीत हुआ कि इसमें विष है। ऋषि उठे, गंगा पास थी, उस पर जाकर न्योली कर्म किया और विष निकाल दिया। सैय्यद मोहम्मद तहसीलदार था। उसने दोषी को पकड़वाया और दयानन्द के दरबार में ले गया। ऋषि से यह सहा न गया कि किसी को उनके कारण बन्धन में डाला जाए। क्या दया पूर्ण उत्तर दिया। मेरा काम तो बन्धन काटना है, बन्धन बढ़ाना नहीं।

बाल ब्रह्मचारी का बल-ऋषि जिस धर्म का प्रचार करना चाहते थे वह उनके जीवन में मूर्तरूप में विद्यमान था। दयानन्द का सबसे बड़ा बल ब्रह्मचर्य बल था। बाल ब्रह्मचारी को अधिकार था कि व्यभिचारियों को डांटे। जालन्धर में विक्रम सिंह ने ब्रह्मचर्य बल का प्रमाण चाहा तो उसकी चार घोड़ों की गाड़ी हाथ से पकड़ कर रोक दी। साईस बल लगाता है, घोड़े यत्न करते हैं, परन्तु गाड़ी हिलने में नहीं आती। पीछे की ओर देखा ऋषिवर गाड़ी रोके खड़े हैं। शरीर से तेज बरसता है। मुख की कान्ति टकटकी लगाकर देखी नहीं जाती।

देवी पूजा-ब्रह्मचारी है और देवियों का आदर करता है। एक नन्ही लड़की बालकों के साथ खेल रही है। ऋषि देखते ही सिर झुका देते हैं। देखने वालों को धोखा है कि सामने खड़े वृक्ष को प्रणाम किया है, देवता-निन्दक को देवता की परोक्ष शक्ति ने देवता-पूजक बनाया है। ऋषि के मुख से सुनना ही था कि 'वह देखो! वह नन्ही बालिका मूर्त रूप में मातृ-शक्ति है,' बस! सभी के मुख से निकला 'धन्य'! धन्य!! देवियों के सत्कार-स्वरूप बाल ब्रह्मचारी दयानन्द! धन्य। इस एक घटना में दयानन्द के देवियों के प्रति सम्पूर्ण भावों का मूर्त चित्र चित्रित है। देवियों की शिक्षा हो और शिक्षा के साथ पूजा हो, यह दो सूत्र ऋषि के देवी सम्बन्धी सिद्धान्त का सार हैं।

अछूत कोई नहीं-दयानन्द की दृष्टि में कोई अछूत न था। उमेदा नाई खाना लाया तो भरी सभा में स्वीकार किया। भक्त की भावना गेहूं के आटे में गुंथी थी, जो भक्त वत्सल की दृष्टि में लाख जन्माभिमानियों की अपेक्षा अधिक सम्मान के योग्य थीं। कसाई (मज़हबी सिख) को किसी ने व्याख्यान सभा से हटाया तो स्वामी जी ने कहा, 'इसे नहीं हटाओ! मेरा व्याख्यान कसाईयों के लिए भी है।'

क्या आप जानते हैं कि सबसे पहला मलकाना रुस्तम सिंह किन शुभ कर कमलों द्वारा पुनीत यज्ञोपवीत से अलंकृत हुआ था ? ऋषि दयानन्द की दयाबल-वाली भुजाओं ने उसे अस्पृश्यता की गहरी गुहा से उठाया और आर्यत्व के पुण्य शिखर पर बिठाया था।

गौ रक्षा-ऋषि का करुणाक्षेत्र मनुष्य जाति तक परिमित नहीं था। प्राणिमात्र दयानन्द की दया के पात्र थे। ऋषि ने गोरक्षा के लिए भरसक प्रयत्न किया। एक निवेदन पत्र पर हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सबके हस्ताक्षर कराए कि गो-हत्या राजनियम से बन्द की जाए। ऋषि ने अपने नाम को सार्थक किया, जब दातारपुर के बाहर सड़क पर जाते हुए एक बैल गाड़ी कीचड़ में धसी देखी। गाड़ीवान का और बस न चलता था, बैलों ने बहुतेरी गर्दनें हिलाई, कन्धों पर बहुतेरा दबाव डाला, पर गाड़ी न खिंची। गाड़ीवान हार कर रह गए। ऋषि को अधिक दया गाड़ीवान पर आई या बैलों पर यह कहना कठिन है। दोनों के हृदय कृतज्ञताभार से आभारी थे जब राजों महाराजाओं के गुरु लोकमान्य दयानन्द ने स्वयं कीचड़ में उतर बैलों

का जुआ अपनी गर्दन पर डाला और जो भार दो बैलों से न खींचा गया था, अकेले अपने भुजबल से कीचड़ से बाहर कर दिया था।

ऋषि की लीला बहुपक्षी लीला है। जिस पक्ष पर दृष्टि डालो वही कहता है, मैं सबसे मीठा हूं। वस्तुतः गुड़ जहां से खाओ मीठा लगता है। इस लीला के अवसान में भी वह महत्त्व है जो और मनुष्यों के जीवन में नहीं।

प्रचार की धुन-ऋषि दयानन्द ने अन्तिम यात्रा जोधपुर की ओर की। इस समय तक ऋषि ने बीसियों आर्य समाजों की स्थापना कर ली थी। पंजाब, पश्चिमोत्तर (वर्तमान संयुक्त) प्रान्त, राजपूताना, यह सब प्रदेश चरणों में सिर झुका चुके थे। कितने राजपूती नरेश शिष्य बन चुके थे। जोधपुर में भी महाराज को बुलाया था। चरण-सेवकों ने विनय की, ''वहां के लोग क्रूर स्वभाव के पुरुष हैं, आप की शिक्षा का गौरव नहीं समझेंगे। सम्भव है, प्राणों के वैरी हो जाएं।'' दयावीर दयानन्द ने उत्तर दिया-''तभी तो जाता हूं क्योंकि बिगड़ों के सुधार की और अधिक आवश्यकता है। रही मेरे प्राण-घात की बात, सो तो यदि मेरी उंगली-उंगली से बत्ती का काम लिया जाए, और इसी से किसी को सीधा रास्ता सूझ जाए तो मेरे जीवन का प्रयोजन इसी बात में सिद्ध हो जाएगा।'' कहने की आवश्यकता नहीं कि ऋषि के पहुंचते ही राजा चरणों का भक्त हो गया, प्रजा अनुराग-रक्त हो गई। प्रतिदिन आनन्दवर्षा होने लगी।

निर्भयता-एक दिन राजा ने महाराज को अपने डेरे पर निमंत्रित किया। ऋषि बिना सूचना दिए जा पहुंचे। राजा के दरबार में उसकी प्यारी वेश्या नन्ही जान आई हुई थी। राजा खिसियाने लगे। उसे पालकी में बैठा कर उठवा तो दिया परन्तु ऋषि से आंखें चार न हो सकी। ऋषि यह कुत्सित दृश्य देखकर लाल हो गए। गरज कर कहा-सिंहों की गोद में कुत्तियों का काम क्या ?

दया-आदर्श-यह निर्भयता ऋषि के लिए विष सिद्ध हुई। विरोधियों ने दल बना लिया। कुछ दिनों में ही जगन्नाथ रसोइए को घूस देकर वीतराग योगीराज को विष दिलवा दिया। ऋषि ने उस समय भी अपनी स्वाभाविक दया से काम लिया। जगन्नाथ ने स्वयं माना, 'ऋषिवर! यह अपराध मुझ से हुआ है।' ऋषि ने उसे धन दिया और आग्रह-पूर्वक कहा कि शीघ्र आंगल राज्य से बाहर हो जाओ जिससे तुम्हारे प्राणों पर संकट न आए।

विष का प्रभाव धीरे-धीरे हुआ। दस्त आने लगे। पेट का शूल बढ़ता गया। बार-बार मूर्छा होने लगी। महीना भर यह क्लेश रहा। वैद्य चकित थे कि इस वेदना में ऋषि संतोषपूर्वक जी रहे हैं। यह ऋषि का चमत्कार था।

देहावसान-जोधपुर से आबू और आबू से अजमेर गए। दीवाली की सायंकाल को जहां घर बार गली बाजार में दीपक जलाए गए यह जाति-कुल-दीप, संसार-समुद्र का ज्योति-स्तम्भ देखते-देखते जगमगाती चकाचौंध से कुंध्याती रात्रि में अन्तर्हित हो गया। देखने वालों ने देखा कि बुझते दीपक ने संभाल लिया। मृत्यु समीप आया देख कर ऋषि सोचते हुए क्षौर कराया, शरीर पोंछवाया, चनों का रस लिया, प्रभु का भजन, मन्त्रों का पाठ करते रहे। अन्त में 'परमेश्वर! तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो।' यह शब्द कहे और अत्यन्त आनन्द पूर्वक प्राण त्याग दिए।

देह छोड़ते समय दयानन्द के मुख पर एक विचित्र कान्ति थी। पूर्ण किए कर्त्तव्य का सन्तोष छाती को उभारे हुए था। जगतजनक की गोदी में परम पिता का प्यारा पुत्र लालायित हृदय के साथ लिए लौट रहा था। पिता की आज्ञा का पालन किया है, यह आल्हाद था, शान्ति थी, सन्तोष था।

दृष्टि रासायण-जीवन प्रचार में अर्पण हुआ था, मरण भी प्रचार का साधन हुआ। गुरुदत्त एम.ए. पंजाब यूनिवर्सिटी में प्रथम रहे थे, उनकी यह ऋषि से प्रथम भेंट थी। बातचीत नहीं हुई, शंका-समाधान नहीं हुआ, प्रश्नोत्तर का अवसर नहीं मिला, परन्तु चंचल, शंका का अवतार तर्क-मूर्त, गुरुदत्त ऋषि पर आसक्त है। उसे कोई सन्देह नहीं रहा, क्षणमात्र में उसकी काया पलट हो गई है। एक दृष्टि ने कुछ का कुछ कर दिया।

ऋषि की दृष्टि रसायण है। आओ ? उस दृष्टि के दर्शन करो। खोट किसका है ? लाओ, खरा सोना हो जाएगा। ऋषि के जीवन के अध्ययन से शिक्षा लाभ करो। उनके ग्रन्थों को पढ़ो और उनके जीवन का मिलान उनके लेखों से करो। भर्तृहरि ने कहा है-

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मानाम्।

यह वाक्य ऋषि दयानन्द के महत्त्व का सार है।

अमर दयानन्द-आज केवल भारत ही नहीं, सारे धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक संसार पर दयानन्द का सिक्का है। मतों के प्रचारकों ने अपने मन्तव्य बदल लिए हैं, धर्म पुस्तकों के अर्थों का संशोधन किया है, महापुरुषों की जीवनियों में परिवर्तन किया है। ऋषि का जीवन इन जीवनियों में बोलता है, ऋषि मरा नहीं करते, अपने भावों के रूप में जीते हैं। दलितोद्धार का प्राण कौन हैं ? पतित पावन दयानन्द। समाज सुधार की जान कौन है ? आदर्श सुधारक दयानन्द। शिक्षा प्रचार की प्रेरणा कहां से आती है ? गुरुवर दयानन्द के आचरण से। वेद का जय जयकार कौन पुकारता है ? ब्रह्मर्षि दयानन्द। देवी सत्कार का मार्ग कौन दिखाता है ? देवीपूजक दयानन्द। ब्रह्मचर्य का आदर्श कौन है ? बालब्रह्मचारी दयानन्द। गोरक्षा के मिष से प्राणिमात्र पर करुणा दिखाने का बीड़ा कौन उठाता है ? करुणानिधि दयानन्द॥ आओ। हम अपने आपको ऋषि के रंग में रंगे। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि का आचार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो। हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्टा हो। नाड़ी-नाड़ी से ध्वनि उठे-ऋषि दयानन्द की जय।

महान् सुधारक : महर्षि दयानन्द

लेखक- श्री गजानन्द जी आर्य

ऋषि ने अपने ग्रन्थों और प्रवचनों में बार-बार घोषणा की है कि मेरा नवीन सम्प्रदाय व मत-मतांतर प्रचलित करने का किंचित् भी अभिप्राय नहीं है। उनका मानना था कि सत्य, सर्वत्र और सर्वदा एक है। परस्पर विरोधी बातें सब सत्य नहीं हो सकतीं। इसलिए सत्य और असत्य के निराकरण के लिए वेद को आधार माना। जो ग्रन्थ और मान्यताएं वेद के विपरीत पड़ती थी उन सबका पुरजोर खंडन किया उस समय तक हिन्दू धर्म में जो सुधारक हुए उन्होंने इस प्रकार की कसौटी नहीं दी थी। यही कारण है कि उन सब सुधारकों के साथ पोंगापंथी लोगों ने तालमेल बैठा ली, किन्तु ऋषि से इस प्रकार का समझौता सम्भव नहीं था। परिणामस्वरूप ऋषि को कट्टरपंथी हिन्दुओं ने अपना प्रतिद्वन्दी समझ लिया। प्रतिद्वन्दी मानने पर हानि यह हुई कि हिन्दू कहे जाने वाला धर्म शुद्ध वैदिक धर्म नहीं बन पाया। परिस्थितिवश कुछ सुधार माने जाने लगे, किन्तु उनका पूर्ण श्रेय ऋषि दयानन्द को देने में हिन्दू धर्म के बहुसंख्यक लोगों ने कंजूसी बरती है।

अपने हिन्दू

ऋषि ने अपनों की बुराईयों को निकालने के लिए बड़ा कठोर प्रयास किया। एक बार एक मुसलमान ने उनको लिखा कि आप मुसलमानों का बहुत विरोध करते हैं तो इसके उत्तर में ऋषि ने लिखा-''यह तो मैं प्रत्येक अवस्था में स्वीकार करता हूं, ईसाई मत का खंडन भी कदापि उससे कम नहीं करता। यहां तक कि मैं अपने हिन्दुओं की वर्तमान धार्मिक अवस्था पर भी सहमति प्रकट नहीं करता। ऋषि के इस वाक्य में अपने हिन्दुओं की वर्तमान धार्मिक अवस्था शब्दों में अपनापन है।''

परिवार के कर्त्तव्यनिष्ठ सदस्य का एक मुख्य दायित्व होता है कि बाहरी आक्रमण से बचे रहने के लिए सदैव तत्पर रहना। हिन्दू समाज की रक्षा में विधर्मियों के अपवित्र हथकंडों से बचाने के लिए ऋषि के कर्मों को स्मरण कर लेना उनके प्रति कृतज्ञता होगी। बात सन् 1880 की है। मुरादाबाद में मुसलमानों की ओर से हिन्दुओं की मान्यताओं की खिल्ली उड़ाने के लिए कुछ पुस्तकें छपी। इसके उत्तर में मुन्शी इन्द्रमणि मुरादाबादी ने मुस्लिम धर्म के विरुद्ध पुस्तकें लिखीं। मुसलमानों ने हल्ला मचाया, सरकार ने मुन्शी जी पर 500/- रु० का जुर्माना और पुस्तकें जब्ती का आदेश दे दिया। मुन्शी इन्द्रमणि ने अपनी व्यथा स्वामी जी को कही। स्वामीजी ने मुन्शी जी के मामले को समस्त वैदिक धर्मियों का मामला कहकर लोगों से सहायता की अपील निकाली। अपील में कहा गया था कि धन की सहायता मेरठ आर्य समाज के प्रधान के पास ही भेजी जाए, ताकि रुपयों का हिसाब ठीक से रह सके और मुकद्दमें के फैसले के पश्चात् बची हुई राशि की स्थायी निधि भविष्य में आने वाले धार्मिक झगड़ों के लिए सुरक्षित रहे। स्वामी जी की अपील का प्रभाव हुआ। मुकद्दमा लड़ने के लिए लोगों ने रुपया भेजा, किन्तु अधिकांश रुपया मुन्शी इन्द्रमणि के पास सीधा आया। विद्वान इन्द्रमणि को धन का लोभ आ गया। समस्त प्राप्त धन पर वह अपना अधिकार जताने लगा, तब स्वामी जी को इस कार्य से दूर हो जाना पड़ा। मुकद्दमें की एक अपील में जुर्माना 500 /- रु० के स्थान पर 100/- रु० हो गया था। अपील आगे और बढ़ती, किन्तु मुन्शी जी के लोभ ने संगठनात्मक संघर्ष में बाधा डाल दी। इस तरह का प्रयास हिन्दू धर्म की रक्षार्थ संभवत: प्रथम है। इससे पहले लड़ाइयां लड़ी जाती रहीं, किन्तु कानून की लड़ाई में सर्व साधारण का योगदान नहीं हुआ था। ऋषि ने मुसलमानों की इस मानसिकता को एक संस्कृत पत्र में इस प्रकार व्यक्त किया था-'यवन जन मतं हि स्वकीय धर्मानुकूल: सकलजन वरिष्ठ: श्रेष्ठकर्मैव नान्य:। इति मनसि निधार्यो-त्कण्ठिता: कुंठिता ते श्रुतिपथ निरतानामुच्छेदमिच्छन्ति नित्यम्।' अर्थात् यवन लोगों का मत है कि अपने धर्मानुकूल व्यक्ति ही सब लोगों में श्रेष्ठ तथा उत्तम कर्म करने वाला है अन्य नहीं। इस मत को मन में रखकर अत्यन्त उत्कण्ठित वे सदा बेदगामी जनों का उच्छेद चाहते हैं।

ईसाई मत खंडन

सन् 1883 में स्वामी जी जोधपुर में थे। उदयपुर महाराणा ने अपने एक विश्वनीय व्यक्ति द्वारा स्वामी जी को समाचार भेजा कि रियासत में ईसाई और मुसलमानों का प्रचार बढ़ता जा रहा है। प्रचार में वे हिन्दू धर्म का अपमान करते हैं अत: कुछ पंडितजन हिन्दू धर्म की मान्यताओं पर मौन रहें, इतना ध्यान आवश्यक है। स्वामीजी ने तत्क्षण दो पुस्तकें प्रश्नोत्तरी की तैयार करके उदयपुर भेजीं और निर्देश लिखा कि प्रैस में छपवाकर अधिक से अधिक संख्या में बांटने का क्रम बना लो, बांटने के लिए रियासत के अधिकारीगण और ब्राह्मण लोग उपयुक्त रहेंगे, किन्तु बांटने वाले ध्यान रखें कि वे अपना धर्मग्रन्थ वेद और इष्टदेव एक परमेश्वर ही कहें। आर्य समाजी को आधे खंडन से चुप कराना स्वामी जी को स्वीकार न था और आर्य समाजी के लिए संभव भी नहीं था, अत: उन्होंने वही उपाय ठीक समझा कि स्थानीय विद्वान् लोग ईसाई मुसलमानों के असंभव और गप्पों का उत्तर उनसे ही मागेंगे, विधर्मियों का प्रचार अपने आप बन्द हो जाएगा। यह कार्य कितना आगे बढ़ सका और वह प्रश्नोत्तरी क्या थी, इसका विवरण प्राप्त नहीं है। परंतु ऋषि ने अपना कर्त्तव्य किया और साथ ही उदयपुर नरेश को प्रेरणा लिखी कि अंग्रेज लोग अपने ईसाई पादरियों को ढाई लाख देते हैं तब हम क्यों नहीं करें ? देश के बच्चे ईसाई स्कूलों में पढ़ते हैं इससे बाईबल की शिक्षा लेनी पड़ती है, यह उनको सहाय नहीं था। महाराजा जोधपुर को उन्होंने एक व्यक्तिगत पत्र लिखा था जिसमें बहुत उपदेश के साथ साथ एक वाक्य यह भी था कि आप अपने राजकुमारों की शिक्षा-दीक्षा ईसाई मुसलमान शिक्षकों से नहीं करायेंगे, क्योंकि ऐसा करने से राजकुमार अपनी संस्कृति से अनभिज्ञ और विहीन हो जाएंगे। पता नहीं इस प्रकार के उपदेश कितने गृहस्थों को स्वामी जी से मिले होंगे। देश का दुर्भाग्य था कि उनकी बातें अनसुनी कर दी गयी। जयपुर राज्य में आर्य समाज के प्रचार में स्थानीय पंडित लोगों द्वारा बाधा डालने का समाचार पाकर ऋषि ने एक पत्र बाबू नन्दकिशोर जी को लिखा था। ''देखो! बड़े शोक की बात है कि जयपुर में अनेक गिरजाघर बन गये और पादरी लोग राम कृष्ण आदि भद्र पुरुषों की निरन्तर निन्दा करते हैं और सैंकड़ों को बहकाकर भ्रष्ट कर रहे हैं। उनके हटाने में पंडित व राजा आदि राजपुरुषों ने कुछ भी प्रयत्न न किया। और जो आप लोगों ने सत्य वेद धर्म उन्नति के वास्ते समाज स्थापित किया है उसकी उन्नति होने में पंडित आदि विघ्नकर्ता होते हैं।'' इसी प्रकार की घटनाओं को पढ़ पढ़ कर पंडित चमूपति जी ने एक पद्य में कहा था-

अपनों के अहसां क्या कम हैं,
गैरों से शिकायत क्या होगी।

शुद्धि कार्य

ऋषि के जीवन को पढ़ने से ऐसा लगता है कि वे वेद के विरोधियों से सदैव सजग रहते थे। देश का सर्वप्रथम अनाथालय जब फिरोजपुर में खोला गया तब उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा था कि अब हमारेअनाथ बच्चे मुसलमान और ईसाईयों के मत में नहीं जाएंगे। सीताबाई नामक एक महिला ईसाई हो गई थी, उसको आर्य समाज अजमेर ने पुन: आर्य बनाया, तब जोधपुर में विराजमान स्वामीजी ने पूरा विवरण अजमेर आर्य समाज के मंत्री से मंगाया था। ऋषि के समस्त कार्यों में एक कार्य इतना अनूठा और अनुपम है कि हिन्दू धर्म को उससे शक्ति और गौरव मिला है। वह है शुद्धि का कार्य। भले ही हम लोग अपनी दुर्बलताओं के कारण इस कार्य में विशेष गति नहीं ला सके, किन्तु एक रास्ता जो शताब्दियों से बन्द पड़ा था वह खुल गया। पंडित उमाकांत उपाध्याय अपने प्रवचनों में लाहौर की एक घटना सुनाया करते हैं। देश के बंटवारे से बहुत पहले की बात है कि एक मुसलमान बेटा अपने बाप से क्रोधित होकर कह रहा था। आप लोगों ने अधिक सताया तो सामने जो आर्य समाज मन्दिर है उसमें जाकर हिन्दू बन जाऊंगा। जिस हिन्दू को ईसाई और मुसलमान घर की मुर्गी जैसा माने हुए थे वहीं एक प्रतिद्वन्द्वी समाज बन गया। महाराज कश्मीर ने सन् 1879 में स्वामी जी महाराज से शुद्धि कार्य को शास्त्र सम्मत मानने के प्रमाण मंगाये थे और स्वामी जी ने वह सब लिखकर महाराज को भिजवा दिये थे किन्तु तब तक पानी सिर से निकल चुका था। पूरा कश्मीर मुस्लिम बहुल हो चुका था। महाराज ने यदि कुछ करने का विचार किया होगा तब भी कट्टरपंथी हिन्दुओं का विरोध अवश्य रहा होगा।

अमृतफलदात्री शिवरात्रि (बोध रात्रि) महापर्व

ले०–श्री राजवीर शास्त्री

कियत्यो नो जाता जगति शिवरात्र्यो।
कियद्भिर्नाकारि प्रथितशिवरात्रिव्रतविधिः।
पर सा काऽऽप्यासीद् यतिवर जगन्मंगलकारि।
सावित्री ज्ञानानाममृतफलदात्री तव यते।।

(दयानन्द लहरी)

भारतीय संस्कृति में पर्वों का विशेष स्थान है। पर्व जहां आमोद प्रमोद रूप में माना जाता है, वहां एक विशेष सन्देह के भी वाहक बनकर हमारे जीवन की पद्धति को परिष्कृत एवं सुशिक्षित भी करते हैं, जिससे एक नई स्फूर्ति, उत्साह व शक्ति का संचार होने से जीवन का रथ प्रगति मार्ग पर अबाध गति से बढ़ता रहता है। परम दयालु परमेश्वर की व्यवस्था में रात्रि का भी दिन से कम महत्त्व नहीं है। दिनभर कार्यरत जीवों को रात्रि (रमण कराने से) विश्राम कराकर पुनः स्फूर्ति प्रदान करती है। यद्यपि रात्रियां सभी समान ही होती हैं, किन्तु फाल्गुन मास की यह रात्रि शिवरात्रि क्यों ? यह प्रश्न सम्भव है कि प्रत्येक बुद्धिजीवी के मन में प्रश्नचिन्ह लगाना हो और वैदिक आस्थाओं पर दृढ़ता से विश्वस्त आर्य जगत् भी ऐसी परम्पराओं में क्यों उलझ रहा है ? यह सोचता है।

यद्यपि रात्रियां सभी समान होती हैं, पुनरपि जब किसी रात्रि या दिन के साथ कोई विशेष (अलौकिक) जीवन की घटना का सम्बन्ध जुड़ जाता है, वह अद्भुत घटना ही दिन अथवा रात्रि को विशेष प्रेरणा देने के कारण विशेष बन जाती है। पौराणिक परम्परा के अनुसार इस परम्परा का कुछ भी महत्त्व हो, हम इस विवाद की चर्चा यहां नहीं करना चाहते हैं, परन्तु शिव जीवों का परम कल्याण करने वाले परमेश्वर की भक्ति के क्षेत्र में अन्धविश्वासों, पौराणिक कल्पनाओं एवं विभिन्न भ्रान्तियों का जो आवरण आ गया था, उससे एक पौराणिक परम्परा में ही पले किन्तु जन्म-जन्मान्तरों के पावन संस्कारों वाले विशुद्ध चित्त बालक के मन में जो प्रश्नचिन्ह लगा, सच्चे शिव को जानने की प्रबल उत्कण्ठा पैदा हुई और आस्तिक जगत् में जो उसने उथल-पुथल मचाकर परमेश्वर के विषय में एक प्रकाश का सन्देश दिया, जिसको पाकर विश्व में ईश्वर के नाम पर मठ-मन्दिर बनाकर बैठे मठाधीशों के गढ़ भयंकर भूकम्पों से डगमगाते भवनों की भांति चलायमान होने लगे और उन्हें अपनी दूषित व भ्रान्त परम्पराओं पर जो कि मानव का सतत अहित ही कर रही थी, विचार करने को बाध्य कर दिया, यही इस पावन पर्व का कल्याणकारी स्वरूप एवं प्रत्येक ईश्वरविश्वासी के लिए सन्देश है।

संसार में काल की अबाधगति के चक्र में न जाने कितनी ऐसी शिवरात्रियां आई हैं और भविष्य में भी आती रहेंगी, किन्तु जैसे कितने वृद्ध कंकालों को मानव देखते ही रहते हैं पर संसार से विरक्त नहीं होते। जो महात्मा बुद्ध जैसी पवित्रात्मायें होती हैं, उन पर तो ऐसी घटनाओं का चमत्कारी प्रभाव अवश्य होता है, ठीक इसी भांति शिवरात्रि पर्व पर कितने आस्तिकों ने पूजा की होगी, कितनों ने मूलशंकर की भान्ति घटनाओं को भी देखा होगा, परन्तु जो अलौकिक प्रभाव मूलशंकर के पवित्र मन पर पड़ा, जिसके प्रभाववश पैतृक सम्पन्न परिवार का त्याग, सच्चे शिव की खोज में बीहड़ जंगलों में विचरण, पर्वतों की कन्दराओं में योगियों की तलाश, भूख-प्यासादि के कष्टों को सहकर साधना पथ को अपनाना और सच्चे शिव का ज्ञान प्राप्त कर उसको अपने तक ही सीमित न करके अकेला ही अकुतोभय होकर नकली शिव के भक्तों से जीवन भर संघर्ष करके सच्चे शिव का वैदिक स्वरूप समझाना, इत्यादि पावन सन्देश का वाहक होने से यह रात्रि सचमुच शिवरात्रि बनकर संसार की कल्याणकारी बनी। सविता-सबको बनाने वाले, प्रेरणा देने वाले, समग्र ऐश्वर्य तथा वेदज्ञान के अधिपति सविता देव के वेदोक्त सत्यस्वरूप को बताकर अज्ञान में भटकते मानव को अमरता प्राप्त कराने वाली रात्रि यथार्थ में बोधरात्रि बन गई। इसलिए हम आस्तिक आर्यजन इस पर्व को 'बोधरात्रि' मानते हैं, और उस महान् महर्षि दयानन्द के अलौकिक उपकारों को स्मरण करके उनके प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट करते हैं। जिस ऋषि ने महाभारत के पश्चात् वैदिक भक्ति की लुप्त ज्योत्सना को पुनः प्रज्जवलित कर ईश्वर के नाम पर अनर्थमूल का भ्रान्त अज्ञानान्धकार की घोर वीथिकाओं में भटकते मानव को सत्पथ के दर्शन कराये, उसके प्रति जितना भी नमन किया जाए, उतना ही थोड़ा है। हम आर्यों को इस पावन पर्व पर एक दृढ़ संकल्प भी लेना है। आज हम ऋषि भक्तों पर महर्षि का बहुत बड़ा ऋण है, उसे उतारने के लिए महान् बलिदान, त्याग, तपस्या एवं प्रचण्ड संगठन की आवश्यकता है। आज भारत में नहीं, प्रत्युत समस्त विश्व के आस्तिक जगत् में भी फिर वे ही पाखण्ड के बीज अंकुरित हो रहे हैं, उनसे मुकाबला करना अतीव दुष्कर कार्य हैं और हम आर्यों की स्थिति भी आलस्य, प्रमाद, स्वार्थ, विघटन आदि दोषों के कारण सुदृढ़ नहीं हो रही है। ऐसे अवसरों पर हमें आत्मनिरीक्षण करके दृढ़ संकल्प लेना है और महर्षि के ऋण से उऋण होने के लिए कटिबद्ध होना है, तभी तो इस पर्व को मनाने की सार्थकता हो सकेगी।

ऋषि बोध का महत्त्व

ले०–श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार

फाल्गुन बदी 14 की रात्रि को हिन्दू लोग महाशिवरात्रि कहते हैं। इसको शिव जी के नाम से मनाया जाता है। व्रत, रात्रि जागरण तथा शिवार्चन इस महारात्रि के कर्त्तव्य है। आर्य समाज के क्षेत्र में इसे महाबोध रात्रि कहा जाता है। यह ज्ञान की रात्रि है। सच्चे शिव के स्वरूप को जानने की रात्रि है।

सन् 1837 वि० सं० 1894 की शिवरात्रि को मूल शंकर नामक एक बच्चा सरल हृदय की पूरी आशा से शिव दर्शन के लिए व्रत रख कर, रात्रि जागरण करने मन्दिर गया। उसकी आशा पूरी न हुई। उसे यह समझ में आ गया कि सच्चा शिव इतनी सरलता से और इन मूर्तियों में नहीं मिल सकता। उसके लिए भगीरथ प्रयत्न करना होगा शरीर और मन को तप और ज्ञान की अग्नि में कुन्दन बनाना होगा। सन् 1864 (वि० सं० 1917) तक लगातार 23 वर्ष शंकर बालक ने, जो मूलशंकर के बाद ब्रह्मचारी शुद्ध चेतन बना और फिर संन्यास लेकर दयानन्द सरस्वती के रूप में आया, यह धूनी, त्याग और तपस्या की तपाई। उसने कठिन योगमार्ग का अभ्यास किया और तब भगवान् के स्वरूप का साधनात्मक आभास हुआ।

पर अभी इस आभास का आधार चाहिए था। यह आधार स्वामी दयानन्द ने गुरु विरजानन्द के पास मथुरा में प्राप्त किया। अब उन्हें एक और उपलब्धि हुई। उन्हें निश्चयात्मक ज्ञान हो गया कि परमात्मा सम्बन्धी तथा अन्य सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान निर्भ्रान्त रूप में ऋषियों के ग्रन्थों द्वारा ही प्राप्त होगा। इन ऋषि ग्रन्थों द्वारा दयानन्द वेद तक पहुंचे। यहां पहुंचकर उनकी आधारभूमि चट्टान की तरह दृढ़ हो गई। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ, मानो, "श्रुतम श्रोतव्यम्, दृष्टम्, द्रष्टव्यम्" जो कुछ सुनने योग्य था, वह सुन लिया, जो कुछ देखने योग्य था वह देख लिया।

इस ज्ञान सम्पत्ति तथा साधना सम्पत्ति के आधार पर ऋषि दयानन्द ने अपनी विचारधारा स्थापित की और इसका ही प्रचार किया। ऋषि दयानन्द बोध का स्वरूप समझने के लिए हमें उनके जीवन के लगभग 30 वर्ष का अध्ययन करना होगा। यह महान् बोध किसी एक दिन का कार्य नहीं, इसका क्रमशः स्वाभाविक विकास हुआ।

ऋषि दयानन्द में ही बोध का इतना लम्बा रूप नहीं। प्रायः सर्वत्र यही रूप होता है। ज्ञान का विकास क्रमशः इसी ही ढंग से होता है। महात्मा बुद्ध ने सिद्धार्थ राजकुमार की आंखों से, जब बूढ़े, बीमार और मृतक को देखा तो उनके बोध का पहला रूप उदय हुआ। उन्हें आभास हुआ कि संसार स्थायी रूप से ही दु:खमय है। इसे छोड़ना ही पड़ेगा। इसके बाद ज्ञान के लिए उन्होंने कठोर तपस्या की। तपस्या द्वारा उन्हें सफलता न प्राप्त हुई। तपस्या को समाप्त कर शांतिपूर्वक महाबोधि वृक्ष के नीचे बैठकर विचार करने पर उनके मन में दूसरी कड़ी आई। इसी प्रकार हजरत मुहम्मद साहब को भी ज्ञान प्राप्त करने में अपनी आयु के चालीस वर्ष से भी अधिक लगाने पड़े। यही अवस्था महावीर स्वामी के बोध की थी। उन्हें अपनी आयु के 43वें वर्ष से ज्ञान का आभास मिलना प्रारम्भ हुआ, शरीर नाशवान् और दु:ख का कारण है, इसलिए त्याग तथा तपस्या द्वारा ही उद्धार होगा, ऐसा उनके ज्ञान का रूप था।

प्राय: लोगों में यह भ्रमात्मक विचार फैला हुआ है कि महान् को किसी विशेष दिन एकाएक ज्ञान का साक्षात्कार हो जाता है। ज्ञान कोई रूपधारी प्राणी नहीं जिसका क्षणभर में साक्षात्कार हो जाए। मन में एक भावना या विचार उदय होता है, परख चलती रहती है। कई वर्ष लगातार विचार करने के अनन्तर वह भावना या विचार बद्धमूल हो जाता है। उसके सब रूपों की परख हो जाती है। बोध का वास्तविक यही रूप है, हां बोध का प्रारम्भ अवश्य महत्त्वपूर्ण होता है।

ऋषि दयानन्द का बोध या ज्ञान जिसे आर्य समाज को उन्होंने विरसे में, मानस पुत्र होने के नाते दिया अन्य बोधों से विलक्षण है। इसके दो रूप हैं, एक साधनात्मक और दूसरा सिद्धान्तात्मक। आर्य समाज बोध सम्पत्ति के कारण हमें तो इस सम्पत्ति के पूरे रूप का भी अभी ज्ञान नहीं। इसके आगे बढ़ाने का

या उन्नत करने का विचार तो दूर की बात है। ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज को जो बोध सम्पत्ति दी है, जरा उसका महत्त्व और विलक्षणता देखिए।

दयानन्द ने ज्ञान रूप में आर्य समाज को वेद और वैदिक साहित्य दिया। यह साहित्य महान् है, और सब रूपों में परिपूर्ण। इसमें हमें लोक और परलोक विषयक सम्पूर्ण सूचना प्राप्त होती है। दयानन्द के अनुयायियों को यह आप नहीं सोचना पड़ा या बनाना पड़ा कि विवाह संस्कार कैसे होगा, जीवन की दैनिक विधि क्या होगी, आयु के भिन्न-भिन्न भागों के क्या कर्त्तव्य होंगे, स्त्री-पुरुष आदि का परस्पर व्यवहार क्या होगा ? आदि-आदि अपनी अवस्था की तुलना अपने ही साथ रहने वाले मतवादियों से करके देखिए। हमारे सिक्ख भाइयों की क्या अवस्था है ? उनके गुरुओं ने उन्हें एक मार्ग, भक्ति मार्ग, सुझाया। हमें इस विवाद में नहीं पड़ना कि सिक्ख पंथ अन्य हिन्दुओं में से अलग किस प्रकार हुआ। देखना यह है कि आर्यसमाजी या दयानन्द के पास जिस प्रकार लौकिक और आध्यात्मिक प्रश्नों के सब उत्तर हैं क्या सिक्ख भाइयों के पास भी हैं। बच्चे के उत्पन्न होने से लेकर शरीर के अन्त तक के सोलह संस्कार आर्य लोगों के सुनिश्चित हैं। सिक्ख भाई अभी तक इन सब संस्कारों का पूर्ण रूप से निर्माण नहीं कर सके। सबसे विचित्र बात है कि उनके अपने गुरुओं के ये सब संस्कार हिन्दू ढंग के हुए, इस प्रकार गुरुओं और उनके अनुयायियों के जीवन व्यवहार में ही विच्छेद हो गया। इसके अतिरिक्त आर्य विवाह विधि में जो भिन्न-भिन्न अंग हैं स्वागत विधि, पाणि ग्रहण विधि, लाजा होम विधि, सप्तपदी, अन्नाहार, ध्रुव दर्शन आदि क्या उतनी उत्तम और सारगर्भित विधियां अभी तक सिक्ख जीवन में बनाई जा सकीं, स्पष्टत: नहीं। कारण यह है कि पन्थ के नेताओं ने जान बूझ कर या अनजाने में उस सब साहित्य की उपेक्षा की जो आर्य जाति को विरसे में मिला है। उन्होंने अपना नया मार्ग बनाया जो नया तो है पर पूर्ण नहीं।

जीवन व्यवहार की बात जाने दीजिए। सिक्ख विचारकों के सामने आत्मा, परमात्मा, तथा प्रकृति का स्वरूप, मोक्ष क्या है, उसकी प्राप्ति कैसे सम्भव है। पुनर्जन्म का आधार क्या है ? प्रश्नों के क्या उत्तर है यदि वे इन प्रश्नों का उत्तर देना चाहते हैं तो उन्हें हिन्दू साहित्य का ऋषि होना पड़ता है। उनके पास अपने ज्ञान का उत्तर नहीं है। कारण यह है कि उनके गुरु सन्त थे, शास्त्र ज्ञानी नहीं, इसलिए उनके अनुयायी वैदिक तथा शास्त्रीय ज्ञान से परे चले गए।

यही बात महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी तथा कबीर आदि सन्तों और महात्माओं के साथ हुई है। जैसे इन सबको अपने समय में प्रचलित धर्मों के बाह्य रूप के कारण धक्का लगा, वैसे ही स्वामी दयानन्द ने भी अनुभव किया। यज्ञों में पशु हिंसा ने महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी को प्रचलित धर्म से अलग कर दिया। जातपात के झंझट और मिथ्या आडम्बरों ने कबीर और गुरु नानक को प्रचलित रूढ़ियों का विरोधी बना दिया। बोधरात्रि के दिन स्वामी दयानन्द को भी ऐसा ही अनुभव हुआ। बोधरात्रि को ही क्यों टिहरी पर मांसाहारी पण्डितों को देख, तन्त्र ग्रन्थों के पढ़ने पर मठों की अवस्था देखकर, और कुम्भ पर हिन्दू जन समाज की अन्ध परम्परा का अवलोकन कर ऋषि दयानन्द का मन भी विचलित हो गया। हो सकता था कि दयानन्द भी एक नया मार्ग चला देते। उनका सामर्थ्य भी कबीर, नानक या महावीर स्वामी से कम न था पर इसे आर्य जाति का सौभाग्य कहिए या भगवान् की कृपा, ऋषि दयानन्द के जीवन में दो तथ्य थे, एक तो उन्होंने ब्रह्मदर्शन योगाभ्यास के शास्त्रीय मार्ग द्वारा किया और दूसरा गुरु विरजानन्द के पास रहकर ऋषियों की वाणी का अध्ययन किया था। अत: उन्हें शास्त्रीय योगमार्ग तथा वैदिक साहित्य पर अटूट श्रद्धा थी ? इसका परिणाम क्या हुआ ?

ऋषि दयानन्द के समय से पहले साधना के, भगवान् प्राप्ति के अनेक मार्ग थे। कबीर का सहज मार्ग, सूफियों का प्रेममार्ग, वल्लभमत का पुष्टिमार्ग, नाथपंथ का हठयोग, चैतन्यमहाप्रभु की प्रेम साधना आदि न जाने कितने मार्ग थे पर ऋषि दयानन्द ने पातञ्जल योग मार्ग को ही स्वीकार किया, जो अपने आप में पूर्ण है, एकांगी नहीं। यदि थोड़ा सा विवेचन किया जाए तो पता लगेगा कि पातञ्जल अष्टांग योगमार्ग की अपेक्षा अन्य मार्गों में कैसे एकांगीपन है। अष्टांग योग मार्ग में समाज और व्यक्ति दोनों की दृष्टि से नैतिक साधना को, यम नियम को पहला स्थान है। वल्लभमत में और सूफी मत में यह नैतिकता कहां है ? इसलिए उसका पतन भी हुआ है। अष्टांग योग मार्ग में आसन और प्राणायाम द्वारा शरीर साधना है, शरीर को पूरा स्वस्थ रखने का विधान है। किसी भी सन्त मत या प्रेम साधना में यह नहीं। फिर

भी यह मार्ग में एक मात्र प्रणव जाप है यह प्रणव जाप अत्यन्त प्राचीन काल से चला आया। अन्य मार्गों में भिन्न-भिन्न जाप है जो भेद बुद्धि पैदा करने वाले हैं। ऋषि दयानन्द के पातञ्जल योग मार्ग को स्वीकार करने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि एक ही शास्त्रीय मार्ग को मानने से साधारण जनता के ठगे जाने की सम्भावना बहुत कम रह जाती है और दूसरे साधना को गुप्त या रहस्य मार्ग बतला कर जो चेले चेलियां बनाने का ढंग चलता है वह बन्द हो जाता है। तीसरे इस मार्ग की बौद्धिक आलोचना की जा सकती है। गुरु परम्परा चलाने वाले तो बुद्धि के छाया से भी परे भागते हैं।

ऋषि दयानन्द ने इस शास्त्रीय मार्ग द्वारा अपने अनुयायियों को एक तो प्राचीन ऋषि परम्परा से जोड़ दिया और दूसरे सीधा परमात्मा का घर देखकर आने वाले साधु सन्तों की ठगी से बचा दिया। परमात्मदर्शन भी अब एक व्यापार हो गया है। इसे बुद्धि से परे, आलोचना से परे, समझा जाता है। वल्लभ मत जैसे मतों में तो गुरु को स्त्री पुत्र, घर सबका अर्पण करना होता है।

इस तरह मार्ग पर चलने वालों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि अध्यात्म-विज्ञान भी एक विज्ञान है। उस पर आलोचना, पर्ख, तर्क और परीक्षण के सब नियम लागू होते हैं। इस क्षेत्र में जो मानसिक अनुभव होते हैं उन अनुभवों को अन्य अनुभवों की तरह ही जांचा जाना चाहिए, रहस्य और गुप्त कह इसे छिपाना अज्ञान का ही एक रूप है। बहुत सी भगवान् के दर्शन नाम से प्रचलित अवस्थाएं भिन्न-भिन्न स्तर के मानसिक अनुभव ही हैं।

ऋषि दयानन्द का बोध अधूरा रहता यदि वे गुरु विरजानन्द के सम्पर्क में न आते। इस सम्पर्क से ऋषि दयानन्द में ऋषियों और वेदों पर अटूट श्रद्धा का भाव उत्पन्न हुआ। यह एक मुख्य कारण है, जिसके द्वारा आर्य समाज उस नास्तिकता के गढ़े में न गिरा जिसमें बौद्ध धर्म और जैन धर्म गिरे। महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी क्षत्रिय थे। अपनी आयु का एक अच्छा भाग वे महलों में रहे। 30 वर्ष की आयु में महावीर स्वामी तथा 28 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध ने गृह त्याग किया। इसके बाद 13 वर्ष महावीर स्वामी ने तप किया तथा अनेक वर्ष गौतम बुद्ध ने। इन दोनों की ही वैदिकधर्म पर और परमात्मा पर कोई आस्था न थी। स्पष्ट है कि उनकी साधना से उन्हें संसार के दुःखमय होने का, यज्ञ भाग के हिंसामय आडम्बर के निरर्थक होने का तथा ऊँच नीच के मध्य के भेद के पाप मूल होने का आभास अवश्य हो गया। सम्भवतः उनके समय वैदिक मत इतना विकृत हो गया था कि उन्होंने इस बात की खोज की आवश्यकता ही न समझी कि इस धर्म के मूल में कोई सच्चाई भी है या नहीं। परिणाम यह हुआ कि वे स्वयं नई परम्परा को लाने वाले बन गए। यह बात स्पष्ट तौर पर असंगत है।

ठीक यही बात सन्त कबीर और गुरु नानक देव के विषय में भी घटती है। इन्हें भी प्रचलित धर्म की बुराईयों का आभास हुआ, यह आभास ठीक था, पर सम्भवतः प्राचीन ऋषि परम्परा में कोई सच्चाई है या इस बात के जांचने का इन्हें कोई साधन प्राप्त नहीं हुआ। सन्त मत, गुरु नानक देव तथा अन्य सन्तों की वाणी से यह स्पष्ट है कि उनके सामने वैदिक धर्म या हिन्दू धर्म का विकृत रूप ही था उज्जवल रूप नहीं। सौभाग्य से ऋषि दयानन्द ने वैदिक साहित्य में तथा ऋषि साहित्य में सच्चाई और उज्जवल पक्ष के दर्शन किए। उन्हें स्पष्ट हो गया कि वैदिक धर्म मूल में अत्यन्त उज्जवल है। बुराईयां पीछे से आई हुई हैं। इस विषय में स्वामी दयानन्द न केवल कबीर आदि सन्तों तथा बुद्ध और महावीर स्वामी आदि महात्माओं की अपेक्षा अच्छी स्थिति में थे, अपितु शंकर तथा सायणाचार्य जैसे वैदिक मतावलम्बियों से भी उनकी स्थिति अच्छी थी। शंकर स्वामी विद्वान् तथा दार्शनिक थे इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं, पर उनकी पहुंच गीता और उपनिषद् तक है, दूसरे उनका दृष्टिकोण सीमित है। वे जीवन के पूरे रूप को उपस्थित नहीं कर रहे, केवल ब्रह्मत्व का निरूपण ही कर रहे हैं। सायणाचार्य अपूर्व विद्वान् थे। वैदिक तथा पिछले संस्कृत व्याकरण में उनकी अद्भुत गति थी पर उनका दृष्टिकोण पौराणिक वायुमण्डल से सीमित है। उनके वेद भाष्य को पढ़ने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उनके सामने यास्क का व्यापक दृष्टिकोण न था उन पर पौराणिक साहित्य का प्रभाव था। इसलिए उनकी व्याख्याएं पौराणिक रंग से रंग गई और वैदिक साहित्य की भावना से दूर चली गई। जहां कहीं भी किसी देवता का उल्लेख है, उनके सामने पौराणिक देवतावाद का चित्र आया और उन्होंने उनकी कहानियों की दृष्टि से व्याख्या की।

यहां शंकर की विचारधारा या सायणाचार्य के वेद भाष्य की आलोचना या तुलना का प्रश्न नहीं, न ही इस पर लम्बा विचार करना है, इसके लिए अलग पूरा निबन्ध चाहिए। यहां केवल इतनी बात स्पष्ट कराई है कि ऋषि दयानन्द के सामने जो वेद और ऋषि साहित्य का उज्जवल रूप है उसके कारण ऋषि बोध का अन्य बोधों या अन्य विद्वानों के विकारों की अपेक्षा कितना अधिक महत्त्व है।

हमने ऊपर यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि ऋषि दयानन्द का महान् बोध जिसे आज हम समझने का प्रयत्न कर रहे हैं समस्त आर्य हिन्दू समाज जाति के जीवन में महान् घटना है। पूर्ण रूप से इस बोध का विकास ऋषि जीवन में अनेक वर्षों में हुआ। इस के दो रूप हैं, एक साधनात्मक अर्थात् ऋषि दयानन्द ने प्राचीन शास्त्रीय पद्धति से योगाभ्यास द्वारा भगवान् का साक्षात्कार किया। दूसरा इस बोध का रूप है ज्ञानात्मक और सिद्धान्तात्मक। अर्थात् ऋषि दयानन्द को यह दृढ़ निश्चय हुआ कि इस लोक तथा परलोक की सम्पूर्ण समस्याओं का उत्तर ढूंढने के लिए वेदों और ऋषि साहित्य का आश्रय लेना चाहिए।

आर्य समाज पर और आर्य समाज के द्वारा सम्पूर्ण हिन्दू समाज पर तथा कुछ-कुछ अन्य धर्मों पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। इस प्रभाव का कुछ संक्षिप्त रूप इस प्रकार है-

1. अष्टांग योग का पूर्ण मार्ग सामने होने पर कोई भी आर्य किसी सन्त मार्गी गुरु या रहस्यमार्गी सन्त या सन्त वचनिए ठग के जाल में आसानी में फंस नहीं सकता। अभिप्राय: यह नहीं कि इस प्रकार के सब लोग ठग होते हैं। इन मार्गों में ठगी सम्भव अधिक है क्योंकि आलोचना और तर्क को यहां स्थान नहीं। इन मार्गों के कई अनुयायी भी सज्जन तथा सत्य प्रिय होते हैं। इसमें सन्देह नहीं। पर इन मार्गों में छल की सम्भावना अधिक है। अष्टांग योग मार्ग में बिल्कुल नहीं।

2. आर्य लोगों में वह चारित्रिक पतन नहीं आ सकता जो प्रेम मार्गी साधन करने वालों में सम्भव है। सूफियों और कृष्ण-भक्तों में ऐसा पतन बहुत हुआ।

3. भगवद् दर्शन के नाम से शब्द सुनना, रोशनी देखना, जड़ समाधि लगाना आदि अधूरे मार्गों पर आर्यों की आस्था न रही। कुछ आर्य लोग जिनको ऋषि दयानन्द के मार्ग का पूरा ज्ञान नहीं, अब भी बहकाए जाते हैं। पातञ्जल योग-मार्ग द्वारा इन अधूरे मार्गों का अपूर्ण रूप स्पष्ट हो जाता है।

ऊपर के तीन व्यापक प्रभाव ऋषि दयानन्द के साधनात्मक बोध के परिणाम हैं। ऋषि दयानन्द के बोध का ज्ञानात्मक या सिद्धांतात्मक रूप है उसका प्रभाव और भी अधिक है।

1. ऋषि दयानन्द को अवतार या भगवान् न माना गया।

2. ऋषि दयानन्द के नाम से कोई नया मत न चला।

3. प्राचीन ऋषि साहित्य का पुनरजीवन आर्य समाज द्वारा हुआ।

4. समस्त हिन्दू समाज में अपने साहित्य के लिए, अपने लिए गौरव की भावना आई।

5. हिन्दू समाज में प्रचलित अनेक बुराइयों का उपाय ढूंढने के लिए हिन्दू समाज से बाहर किसी को न जाना पड़ा। स्त्रियों की हीनावस्था, अछूत समस्या, पण्डों की पोपलीला, मृतकों के संस्कार प्रपञ्च आदि सैंकड़ों बुराइयों के कारण अब किसी को हिन्दू-समाज से अलग होने की आवश्यकता नहीं। हिन्दू समाज के रहते हुए ही इन त्रुटियों का उपाय हो सकता है और हो रहा है।

6. आर्य धर्म एक दुर्बल धर्म न रहा। आलोचना, तर्क, विज्ञान, इन सब से बढ़कर अन्य धर्मावलम्बियों के आक्रमण से आर्य-धर्म को कोई भय न रहा। स्थिति उल्ट हो गई। आर्य लोगों की प्रबल युक्तियों से हिन्दू समाज के अन्तर्गत और हिन्दू समाज से बाहर के सब मतों को भय लगने लगा।

7. हिन्दू धर्म के नाम से चलने वाली पौराणिक परम्परा सदा के लिए मृत प्राय हो गई और भी न जाने कितने रूपों से ऋषि दयानन्द के महान् बोध का हमारी समस्त समाज पर प्रभाव पड़ा। ऋषि दयानन्द का बोध महान और विलक्षण था।

इस बोध पर आचरण करने से हमारा समाज, आर्य समाज तथा समस्त हिन्दू समाज सबल और प्राणवान हो सकता है। हमारी प्राय: सब दुर्बलताएं नष्ट हो सकती है। न केवल हमारा समाज ही अपितु हमारा देश भी अपनी प्राचीन सभ्यता के अभिमान के साथ और अपने शानदार वर्तमान के गौरव के साथ सम्पूर्ण देशों में मान और प्रतिष्ठा का स्थान प्राप्त कर सकता है। समस्त आर्य समाजियों का, विद्वानों तथा साधारण सभासदों का भी, परम कर्त्तव्य है कि इस बोध का रूप अपने आचरण द्वारा उज्जवल बनाएं तथा इसका समाज के प्रत्येक स्तर में प्रचार करें। इससे ही आर्य समाज का, हिन्दू समाज का और देश तथा संसार का कल्याण है।

हम भी शिव बने : कैसे ?

लेखिका-प्रिंसीपल विमला श्रीवास्तव

शिव रात्रि पर्व से प्रेरणा प्राप्त कर आइये हम भी शिव बनें परन्तु कैसे ? इसका उपाय निम्नलिखित है-

शिव का अर्थ है कल्याणकारी। 'शिव' ईश्वर का पर्यायवाची शब्द भी है क्योंकि संसार का सबसे अधिक कल्याणकारी यदि कोई है तो वह है इस संसार का रचयिता, पालन पोषणकर्त्ता, रक्षाकर्त्ता, संहारकर्त्ता, सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक परमात्मा। इस कारण वेदों में उस परम शक्ति को 'शिव', 'शंकर' आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। ईश्वर को 'शिव' नाम से सम्बोधित करते हुए नमस्कार मंत्र उदाहरणीय है-

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च,
नमः शंकराय च, मयस्कराय च,
नमः शिवाय च, शिवतराय च।

कल्याणकारी परमात्मा का शिव रूप सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी व आकाश ये पांच तत्व जिनसे सृष्टि का निर्माण हुआ है, हर समय प्राणीमात्र का निरन्तर कल्याण कर रहे हैं।

सूर्य अग्नि का ही रूप है जिससे सदैव हमें प्रकाश, चेतना व प्रेरणा शक्ति प्राप्त होती है। पृथ्वी मां की भांति अपने मधुर फल-फूलों व रोगनिवारक औषधियों द्वारा निरन्तर प्रेमभाव से हमारा पालन-पोषण करती है। वायु हमें केवल प्राण ही प्रदान नहीं करती अपितु हमें प्यार से चूमती हुई मां की तरह लोरी दे-देकर आनन्दित भी करती है। जल हमें निरन्तर प्राण प्रदान करके शीतलता व तृप्ति प्रदान करता है। आकाश के द्वारा शिव रूप परमात्मा हमें वाणी देकर परस्पर वार्तालाप, व संगीत का आनन्द प्रदान करता है।

सारांश यह है कि यदि ये पांच तत्व न होते तो हम कभी भी सुखी व आनन्दित नहीं हो सकते थे परन्तु हमारा दुर्भाग्य है कि हमने ईश्वर की इस महान् देन को कभी महत्त्व नहीं दिया और न ही उसके प्रति हम कभी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। भक्त कवि गुरु नानक देव जी ने सत्य ही कहा है-

दात पियारी, बिसरिया विचार।
कोई न जाने जनम मरण विचार।

अर्थात् दाता ने जो कुछ हमें दिया है उसकी देन तो हमें अत्यन्त प्रिय हो गई परन्तु उसे देने वाले दाता को हम भूल गये। किसी को अपने जन्म व मरण का भेद ही मालूम नहीं।

हमारे भारतीय चित्रकारों व मूर्तिकारों ने परमात्मा के इस शिव रूप को चित्र व मूर्ति के रूप में जितनी सुन्दरता के साथ चित्रित किया है वैसा चित्रांकन विश्व का कोई चित्रकार या मूर्तिकार आज तक नहीं कर सका।

भारत में ईश्वर के शिव रूप की वैदिक काल से स्तुति वन्दना चली आ रही है, वह इसके साक्षी हैं शिव की प्रतिमा या उसके चित्र उस ईश्वर के कल्याणकारी गुणों के प्रतीक हैं जो हमें शिव को पाने के लिए तथा कल्याणकारी बनने की मधुर शिक्षा व प्रेरणा प्रदान करते हैं।

शिव की प्राप्ति पवित्र मन द्वारा आलस्य त्याग कर, साधना, करने से ही सम्भव हो सकती है परन्तु दुर्भाग्य से हम लोग धीरे-धीरे इस सत्य साधना को भूल गये और केवल शिव की मूर्ति पूजक बनकर रह गये। मूर्ति से प्रेरणा लेने के स्थान पर हम केवल यंत्रवत अर्घ्यादि चढ़ाने व तिलक लगाकर चरणामृत पीने में ही अपनी पूजा की इति श्री समझ बैठे। इस यंत्रवत पूजा विधान से एक दिन सच्चे शिव के अनुरागी मूलशंकर जी जब सच्चे शिव के दर्शन नहीं कर सके तो उनकी अतृप्त आत्मा विद्रोह कर उठी और अपने पिता, पितामह द्वारा मनाई जाने वाली 24 फरवरी 1838 की 'शिवरात्रि' उनके लिए 'बोध दिवस' बन गई। अन्ततोगत्वा मूलशंकर जी सच्चे शिव की खोज करने के लिए घर से निकल पड़े और अपनी भक्ति साधना व तपश्चर्या द्वारा उन्होंने एक दिन सच्चे शिव को खोज निकाला तथा उस कल्याणकारी ईश्वर के गुणों को धारण करके वह स्वयं शिव रूप हो गए। यदि हम भी चाहें तो हम भी शिव जी के चित्र को ध्यान में रखकर उसमें दर्शाए गए कल्याणकारक गुणों को अपने जीवन में धारण करके शिव बन सकते हैं। उदाहरणतया-

शिवजी के चित्र में बाघ के चर्मासन पर उनको समाधि में

लीन दिखाया गया है जिनकी जटा से गंगा प्रवाहित हो रही है। साथ ही दूज का चांद दिखाया गया है। माथे पर दो नेत्रों के बीच में तीसरा नेत्र है। गले में सांप लटके हैं। कण्ठ विष पीने के कारण नीला दिखाया गया है। शरीर पर भवभूति रमायी हुई है। पास में त्रिशूल, डमरू व नन्दी बैल है। इन सब चिन्हों के द्वारा चित्रकार ने बहुत गम्भीर अर्थ को चित्रित किया है जो निम्नलिखित है-

1. सिर से बहने वाली गंगा का अर्थ है, गंगा की तरह शीतल व पुनीत विचारधारा अर्थात् काम, क्रोधादि विकारों से रहित शांत, पवित्र व उज्जवल विचारधारा।

2. दूज का चन्द्रमा-उत्तरोत्तर बढ़ने वाले, लोक रंजक शीतल ज्ञान रूपी प्रकाश का प्रतीक है।

3. तीसरा नेत्र-इससे तात्पर्य है अलौकिक ज्ञान जिसके द्वारा शिवजी ने कामदेव को भस्म कर दिया।

4. शरीर पर भवभूति-इसका अर्थ है शरीर नाशवान है। प्राण निकल जाने के बाद यह शरीर राख हो जाएगा अतः इससे मोह करना उचित नहीं।

5. बाघ चर्मासन-इससे अभिप्राय है काम वासना बाघ की तरह शक्तिशाली होती है इस पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

6. डमरू-यह कांति, शांति, शक्ति व प्रेरणा का प्रतीक है।

7. त्रिशूल-अर्थात् त्रि (तीन) + शूल। त्रिशूल तीन प्रकार के शूलों अर्थात् शारीरिक, मानसिक व प्राकृतिक कष्टों का प्रतीक है। वेदमन्त्र द्वारा शांतिपाठ में हम तीन बार शांति, शांति, शांति का उच्चारण करते हैं इसके द्वारा हम प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मा हमारे इन तीन प्रकार के शूलों को दूर करें।

8. नंदी बैल-यह कृषि का साधन तथा समृद्धि का प्रतीक है।

9. गले में सर्प माला-यह लोगों के कष्टों को गले लगाने या दूर करने का प्रतीक है।

10. नीलकण्ठ-यह समाज सेवा करते हुए कष्टों को पीने की ओर संकेत करता है।

तात्पर्य यह है कि शिवजी के चित्र से चित्रित शिव के उपरोक्त गुणों को धारण करने से हम भी शिव बन सकते हैं।

1. शिव बनने के लिए हम सबसे पहले काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों पर विजय प्राप्त करके अहिंसक बनने का अभियान आरम्भ करें।

क्रोध को शांत करने का एक ही उपाय है वह है हम अपने को शक्तिमान, न्यायकारी व दयालु न मानकर ईश्वर को ही सर्वशक्तिमान, न्यायकारी व दयालु मानकर चलें। इससे हमारा अहंकार, नष्ट होगा और हमारे सिर से शीतल व पवित्र विचारों की गंगा प्रवाहित होने लगेगी। बिना शीतल व शुद्ध विचारों के हम दूसरों का कल्याण तो दूर रहा अपना कल्याण भी नहीं कर सकते।

2. हम दूज के चन्द्रमा की भांति निरंतर अपने ज्ञान के प्रकाश को बढ़ाने के लिए स्वाध्याय करें।

3. हम अपने शरीर को नाशवान समझकर समाज के कष्ट रूपी सांपों को गले से लगाकर चले अर्थात् उनके कष्टों को दूर करने का प्रयत्न करें।

4. बाघ के चर्मासन पर बैठ कर अर्थात् संयमी होकर ईश्वर का ध्यान व चिंतन करें। ईश्वर भक्ति से ही हम कल्याणकारी कार्य कर सकते हैं।

5. समाज सेवा के कार्यों में मिलने वाले कष्टों या अपमानरूपी विष को पी जायें परन्तु उन्हें अपने गले तक ही रखें। उन्हें गले से नीचे उतार कर हृदय को न छूने दें। यदि यह विष एक बार गले से उतर कर हमारे हृदय तक पहुंच गया तो हममें क्रोध उत्पन्न हो जाएगा। तब हम समाज का कल्याण नहीं कर पाएंगे।

6. हानिकारक रूढ़ियों को समय-समय पर डमरू बजाकर अर्थात् क्रांतिकारी विचारों द्वारा दूर करते रहें।

7. समाज के तीन प्रकार के मूलों को अपने तन, मन, धन रूपी त्रिशूल द्वारा दूर करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें तथा असमर्थ रोगी व गरीब प्राणियों की सेवा करें उन्हें सुख पहुंचाने का प्रयत्न करें।

8. हम अपने भौतिक नेत्रों के साथ-साथ ज्ञान के तीसरे नेत्र का भी प्रयोग करें। तदर्थ हम वेद अध्ययन, आत्मचिंतन व महान व्यक्तियों के जीवन से अपने ज्ञान की निरन्तर वृद्धि करें ताकि जब भी कोई शत्रु हमारी ईश्वर भक्ति व समाज के कल्याणकारी कार्यों के बीच में बाधक हो तो उसे हम ज्ञान द्वारा नष्ट कर सकें।

सारांश यह है कि शिवजी का चित्र शिवम् (कल्याणकारी) गुणों का चित्र है। इन गुणों को धारण करके समाज का कल्याण करते हुए हम भी शिव बन सकते हैं। इसके लिए स्वाध्याय, संकल्प, सेवा व साधना परम आवश्यक है।

यो जागार तमृचः कामयन्ते

ले०–श्री देशबन्धु विद्यार्थी

वेद में सभी पदार्थों का ज्ञान बीज रूप से निरूपित है, और जो जागता है वह सभी ज्ञानों का अधिकारी हो जाता है। सोने वाले की प्रायः निन्दा ही होती है और जागने वाले की सभी प्रशंसा करते हैं। अतः मन्त्र ने कहा–''यो जागार तमृचः कामयन्ते'' अर्थात जो जागता है उसे ऋचायें चाहती हैं। भावार्थ यह है कि जो जागता है, सजग रहता है, सावधान रहता है, वही संसार में उन्नति करता है, क्योंकि वह तर्क, अनुसन्धान, अन्वेषण और शास्त्र द्वारा सचेत मन से जगत् और उसके पदार्थों की रचना को देखता है। जड़-चेतना रहित पदार्थों की रचना को देखता है। जड़-चेतना रहित पदार्थ जो उनका कोई प्रयोजन नहीं है, लेकिन वे भी हमें सावधान रहने की प्रेरणा देते रहते हैं। मेरा दो वर्ष अध्ययन काल गुरुकुल कांगड़ी रहा और मैंने वहां से स्नाकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन दो वर्षों के अध्ययन काल में मैं यदा कदा डा० महावीर जी अग्रवाल ''अध्यक्ष संस्कृत विभाग'' गुरुकुल कांगड़ी के साथ हरिद्वार की उस 'हर की पौड़ी' नामक जगह में चला जाया करता था। कभी-कभी वे सपरिवार भी उस रम्य वातावरण को देखने चले जाते थे, सायंकाल के समय, जिस समय सूरज डूब रहा होता है, अन्धेरा चारों तरफ फैल रहा होता है, आकाश में चन्द्रमा की किरणें फैल रही होती हैं, उस समय चारों दिशाओं से आए हुए लोग फूल लेकर ढ़ोनों में दीप जलाकर गंगा की उस पवित्र धारा में प्रवाहित करते हैं। मेरा मस्तिष्क सहसा ही घूम गया और यह प्रश्न मैंने श्री गुरु जी से पूछा कि-क्या इन ढ़ोनों में दीप जलाकर गंगा की पवित्र धारा में प्रवाहित करने से विशेष प्रकार का लाभ होता है, या इसकी कोई बड़ी मान्यता है। उन्होंने कहा कि इसकी बड़ी मान्यता है, जरा सोचो, विचार करो कि क्या सामने गंगा की धाराओं में बहते हुए ये दीपक चांद-सितारों से नजर नहीं आ रहे हैं ? क्या वे आकाश से इस पृथ्वी तल पर उतर कर इन तरंगों में नहीं बह रहे हैं ? मैंने सहजभाव से कह दिया-हां ये तो वह रहे हैं। उन्होंने पुनः उत्तर दिया ये छोटे-छोटे दीपक दूर-दूर तक इन तरंगों में बहते हुये हमसे यही तो कह रहे हैं कि आज इस दुनिया के अन्दर, आज विश्व के अन्दर अज्ञान छाया हुआ है, अन्धकार छाया हुआ है इसलिए उस अज्ञान को, उस अन्धकार को, दूर भगाने आये हैं और ''यो जागार'' का संदेश दे रहे हैं। मैंने इस बात को हृदयङ्गम कर विचार किया कि काश! यदि यही विचार सबके मस्तिष्क में होता तो सारा का सारा संसार इस अन्धी दौड़ में जो आज भटकता फिर रहा है, उन सबका कल्याण हो जाता।

वास्तव में हम यदि गंभीरता से विचार करें तो पता चलता है कि ज्ञान के नेत्र खुले बिना हमारा उद्धार नहीं हो सकता। दिन व्यतीत होते ही रात्रि बेला शुरू हो जाती है, तब क्या मानव जाति, क्या कीट-पतंग, पशु, पक्षी, पुष्प, लता, वनस्पति सब इस निन्द्रा देवी का आस्वादन करते हैं। हम अपने जीवन के पहलुओं को परखकर अपने दृष्टिकोण में आने वाले प्रातः के लिए एक रंगीन सपनों को सजाये हुए निन्द्रा की गोद में समा जाते हैं। वास्तव में रात्रि सबके लिए नितान्त आवश्यक है, लेकिन ऋषि दयानन्द सरस्वती के लिए यही रात्रि चेतनता और जीवन परिवर्तन का कारण बनी। वह शिवरात की रात्रि उनके लिए बोध ज्ञान कराने वाली बन गई। यहीं से वह अपने जीवन का नया मोड़ शुरू करते हैं। यदि उन्हें यहीं से द्विजन्मा की संज्ञा दे दी जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। छोटे से उस चूहे की घटना ने उनकी अन्तः चेतना को जगाया और ''यो जागार तमृचः कामयन्ते'' का संकेत कराया। महर्षि दयानन्द जी 14 वर्ष की आयु में सिर्फ एक मूलशंकर थे अभी दयानन्द सरस्वती नहीं बने थे, वे कितने सजग रहे होंगे, इस समय उसका वर्णन लेखनी का विषय नहीं है। वे उसी रात एक अटल शिव को, अटल सत्य को प्राप्त करने के लिए कैसे तत्पर हुए होंगे ? अस्तु! जो कुछ भी उस समय उनके अन्तःकरण में प्रक्रिया हुई होगी हम उसका ब्यान नहीं कर सकते। जब वे मूलशंकर से महर्षि दयानन्द सरस्वती हुए तो उनको विश्वास हो गया कि वेद को अपनाने से व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और अन्ततः विश्व की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। यही विश्वास और संकल्प मन में लेकर वेद विरुद्ध मत मतान्तरों, अन्धविश्वासों कुरीतियों के निवारण के लिए कार्यक्षेत्र

में उतरकर अपने चिन्तन में बहती हुई इन धाराओं को अवरुद्ध कर देश और समाज के लिए एक नूतन प्रकाश की दिशा प्रदान की। जिन विरोधी शक्तियों के सामने बड़े-बड़े योद्धा भी विचलित हो जाते हैं, वे उन शक्तियों के साथ जीवन पर्यन्त लड़ते रहे, जूझते रहे, दृढ़ता के साथ, निर्भयता के साथ दूसरों से लोहा लेते रहे। आत्मविश्वास और प्रभु विश्वास मन में स्थापित करके मानव-समाज के लिए सच्चा मार्ग प्रशस्त किया। वैदिक ज्ञान के आलोक से भूले लोगों को एक नया सन्मार्ग दिखाया। वास्तव में उनके लिए वह रात सुखदायी थी, जो एक नई खोज के साथ, नई उमंग और तरंग के साथ एक नये सुप्रभात को जन्म देने के लिए अवतरित हुई।

उन्होंने 'यो जागार तमृच: कामयन्ते' का पाठ पढ़ाकर हमें एक नया उद्‌बोधन दिया। ढेर सारे हमारे लिए अमूल्य रत्न दिये किन्तु अभी तक हम निन्द्रा माता की गोद में सिमटे हुए हैं। हर वर्ष शिवरात्रि आती है और हमारे चित्त को झंकृत कर जाती है किन्तु इन्सानियत उसी अन्धेरे गर्त में पड़ी है। दीन हीन होकर निरन्तर पतन के कगार पर खड़ी है। आज वेद-संस्कृत धर्म इतिहास आदि संघर्ष के दौर से गुजर रहे हैं। संस्कृत भाषा, आर्य भाषा, वेद वाणी और नैतिक जीवन पद्धति को अनुपयोगी समझकर दूर भगा रहे हैं। हमने भौतिकवाद की नयी पीढ़ी में पलकर, खान-पान, रहन-सहन, वेष-भूषा-भाषा आदि सब कुछ विस्मृत कर दिया है। जिस सत्य के लिए ऋषिवर देव दयानन्द ने अनेक बार जहर के प्याले पिये, वह सत्य हमसे दूर होता जा रहा है। आज हमारे मन और मस्तिष्क को कुविचारों ने आ घेरा है, हम परमार्थ की भावना त्यागकर स्वार्थ की भावना में विचरण कर रहे हैं। यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती में यही भावना होती तो वे स्वराज्य के प्रेरणास्रोत नहीं बन सकते थे, देशी राजाओं में जागृति कभी आगे नहीं आ सकती थी, क्योंकि सर्वप्रथम उन्होंने ही स्वाधीनता का शब्द फूंका था। नारी जागृति कभी नहीं आती यदि अपना विचार स्वातन्त्र्य सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में नहीं देते। समाज में नव जागृति लाने वाले सर्वप्रथम सामाजिक क्रान्तिकारी सुधारकों में इनका नाम नहीं होता। सम्पूर्ण समाज को क्षमता का पाठ न पढ़ाया होता। 'यो जागार तमृच: कामयन्ते' इस वेद की ऋचा को घर-घर न सुनाया होता, तो आज हम स्वतन्त्रता में विचरण नहीं कर रहे होते अपितु न जाने किस दासता की जंजीर में जकड़े होते। सूर्य जड़ होता हुआ भी समस्त चराचर जगत् को प्रकाशित कर जाता है। चन्द्रमा भी अपनी शीतल किरणों से सबको आनन्दित करता है। तारे टिमटिम करते हुए सजग रहने की प्रेरणा दे जाते हैं। ये जड़ वस्तु होते हुए भी हमारे लिए उपकारक हैं, किन्तु मनुष्य चेतन होता हुआ भी इनसे शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ है और जड़वत बनता जा रहा है। आओ इस पुनीत अवसर पर ऋषि के बताये हुए सत्यमार्ग पर चलने का संकल्प लें, अपने स्वरूप, लक्ष्य और कर्त्तव्य को पहचाने, क्योंकि वेद-संस्कृत धर्म आदि का दायित्व अब हमारे ऊपर है। हम अस्तिकता, श्रद्धा, प्रेम और परस्पर सहयोग की भावना संजोकर कर्त्तव्य कर्म में जुट जाएं तथा ''यो जागार तमृच: कामयन्ते'' का वैदिक संदेश घर-घर पहुंचा दें।

दिव्य शिव की रात्रि है

ले० राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

दिव्य शिव की रात्रि है, आयी जगाने के लिए।
भूमिमण्डल के गहन तम को भगाने के लिए।।
थी यही शिवरात्रि जिसने, ऋषि दयानन्द को जगाया।
मूल शंकर के हृदय में, ज्ञान की वीणा बजाया।
भूमि पर फैले तिरमिर को, था इसी ने भगाया।
नवल युग में जागरण का, गीत स्वर्णिमा सा सुनाया।
वेद का स्वर फिर धरा को, नर, सुनाने के लिए।
दिव्य शिव की रात्रि है, आयी जगाने के लिए।।
मिट गया था ऋषि दयानन्द-के प्रयत्नों से अन्य।
भाग्य जागे मातृ-भू के, हो गए जन-जन अभय।
दनुजता की वृत्तियों का हो गया था पूर्ण क्षय।
सत्य की लहरी पताका सब दिशाओं में मधुरमय।
सत्य का संगीत फिर से, नव, गुंजाने के लिए।
दिव्य शिव की रात्रि है, आयी जगाने के लिए।।
दे रही है बोध की यह, रात्रि फिर से नव संदेश।
शांति-सुख से व समृद्धि से पूर्ण हो प्यारा स्वदेश।
हो मनुजता का सुशोभित मनुज तत्त्वों से सुवेश।
वेद का निकले प्रखर सा व्योम में दिनकर-दिनेश।
ज्योति नूतन फिर धरा पर, नव जगाने के लिए।
दिव्य शिव की रात्रि है, आयी जगाने के लिए।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

-ले. श्री सत्यदेव 'विद्याव्रत' जी

हमारी भारत माता की कोख से अनेक वीर उत्पन्न हुए हैं और होते रहेंगे। गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी ससंभ्रमा यस्य। तेनाम्बा यदि सुतिनी वद वन्ध्या कीदृशी भवति।। के अनुसार विश्व की अंगुली इस माता के सपूतों पर ही गिरती है, अतः इसे सच्ची जननी कहलाने का अधिकार प्राप्त है। इसने ऐसे-ऐसे पुत्रों को जन्म दिया है कि संसार आश्चर्य में पड़ गया।

विक्रम सम्वत् 1881 फाल्गुण कृष्णा दशमी, शनिवार को ब्रह्म मुहूर्त में माता अमृतबाई की कोख से सौराष्ट्र भूमि के मौरवी राज्यान्तर्गत टंकारा नगर के जीनापुर मुहल्ले के निवासी औदीच्य सामवेदी ब्राह्मण श्री कर्षण लाल जी के घर में एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण बालक का नाम मूलशंकर रखा गया, किन्तु प्रेम के कारण उन्हें 'दयाराम' के नाम से भी पुकारते थे।

मूलशंकर जी के पिता कर विभाग के अधिकारी थे। घर धन-धान्य से परिपूर्ण था। प्रथम संतान का जन्म हुआ देखकर सभी सज्जनों को प्रसन्नता हुई। बालक शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति बढ़ने लगा। पांच वर्ष की अवस्था में कुलरीति के अनुसार पिता ने बालक का विद्यारम्भ संस्कार कराया। हिन्दी एवं गुजराती वर्णमाला सिखाने के पश्चात् पिता ने उच्च भावनाओं को अपने अन्दर रखकर बालक को बहुत से श्लोक एवं सूत्र कण्ठस्थ कराए। आठ वर्ष की आयु में पिता ने उपनयन संस्कार करा के मूलशंकर को अपने छोटे भाई के पास यजुर्वेद का रुद्राध्याय पढ़ाने के लिए भेजा। बालक की बुद्धि तेज देखकर एक दूसरे विद्वान् से उन्हें शब्दरूपावली, धातुरूपावली एवं संस्कृत के अन्यान्य ग्रंथ भी पढ़वाने लगे। मेधावी शिष्य को देखकर गुरु का हृदय प्रसन्न हो उठता है। ठीक इसी प्रकार मूलशकर जैसे बुद्धिमान् छात्र को प्राप्त करके सब अध्यापक खुश होते थे और बहुत प्रेम से उसे पढ़ाते थे। समय बीतते देर नहीं लगती। बालक मूलशंकर अब चौदह वर्ष के हो गए थे। पास में ही शिवरात्रि का पर्व आया हुआ था। पिता जी शंकर की कहानी बालक को सुनाते, जो उसके हृदय में कौतूहल उत्पन्न करती थी। माता के निषेध करने पर भी पिता जी ने मूलशंकर को स्वर्गादि का प्रलोभन दिलाकर शिवरात्रि का उपवास रखने को कहा। बालक जिज्ञासु था। उसने भी अपने पिता के साथ मन्दिर में उपवास रखा। वहां अन्य लोग भी उपस्थित थे। रात्रि के तृतीय पहर में सभी सोने लगे, तो बालक मूलशंकर ने आंखों पर जल छिड़क कर अपनी नींद भगाई। बालक केवल यह देखना चाहता था कि भगवान् शंकर कैसे हैं?

थोड़ी देर में ही देखते क्या हैं कि एक चूहा आकर शिवलिंग पर चढ़कर प्रसाद खा रहा है और इधर-उधर कूद रहा है। यह घटना देखकर बालक को आश्चर्य हुआ कि 'ये शंकर कैसे हैं, जो चूहे को भी अपने ऊपर से नहीं उतार सकते? मैंने तो सुना था कि वे दुष्टों को दण्ड देते हैं। चूहा इनके ऊपर कूद रहा है, इनके भोज्य पदार्थ का सेवन कर रहा है तब भी ये कुछ नहीं करते, आश्चर्य है!' बालक देखते-देखते परेशान हो गया। उसने अपने पिता को जगाया और पूछा कि 'क्या ये ही वे शंकर हैं जिनकी कथा पुराणों में आती है?' पिता को ऐसी बातें अपने पुत्र के मुख से सुनकर क्रोध आया और उन्होंने उपेक्षापूर्ण शब्दों में कहा कि 'तू व्यर्थ के प्रश्न करता है। भगवान् शंकर तो कैलाश पर्वत पर रहते है और हम लोग तो शिव मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करके उसकी पूजा करते हैं।' यह उत्तर सुनकर बालक के हृदय को आघात पहुंचा। वह सोचने लगा कि 'देखो! संसार के मनुष्य कितने अबोध है।' उसका मन वहां से जाने को चाहा और उसने पिता जी से अनुमति लेकर घर आकर माता जी को जगाकर भोजन कर लिया और निद्रा देवी की गोद में चला गया।

सत्य की एक छोटी-सी चिन्गारी असत्य के महान् पर्वत को भी भस्म कर देती है। बालक मूलशंकर ने पूर्ण निश्चय कर लिया था कि अब से आगे कभी ऐसा उपवास नहीं रखूंगा। प्रातः ही

पिता जी आए। भोजन की बात सुन कर बहुत कुपित हुए। किन्तु पुत्र ने सीधा कह दिया कि 'जो भगवान् कैलाश पर्वत पर रहते हैं, उनकी यहां पूजा करना ठीक नहीं।' माता जी ने भी 'बालक अबोध है' कहकर पिता जी का क्रोध शान्त करवाया।

दिन बीतते गए, परन्तु मूलशंकर की शिवदर्शन की इच्छा तृप्त न हुई। अभी 16 वर्ष के ही थे कि छोटी बहन हैजे से मर गई। सब घर वाले रोये, किन्तु मूलशंकर की आंखों से एक भी बूंद आंसू न निकला। वह स्तम्भ का सहारा लेकर यही सोच रहा था कि मृत्यु क्या चीज़ है, जिससे आज मेरी बहन मुझ से बिछुड़ रही है?

मूलशंकर ने अब तक बहुत कुछ पढ़ लिया था। उन्हें संसार में आए अब उन्नीस वर्ष हो चुके थे। शरीर तेज से दीप्त था। यौवन चढ़ता जा रहा था। सहसैव उनके प्रिय चाचा को भी हैजा हुआ। उन्होंने चारपाई पर लेटे ही बालक को बुलाया। कुछ कहा नहीं, अपितु रोने लगे। इस दृश्य को देखकर मूलशंकर भी फूट-फूट कर रोने लगे। महाकाल ने सबके देखते-देखते चाचा के प्राण ले लिए। अपने चाचा को मृत्युशय्या पर पड़े देखकर मूलशंकर के मन में तीव्र वैराग्य उत्पन्न हो गया। शिवरात्रि के पर्व से तो वैराग्य का दीपक जल ही रहा था, अब वह तीव्र गति से जल उठा। वह सभी से पूछता कि 'मृत्यु से कैसे बच सकते हैं?' सभी का उत्तर था उस भगवान् को पा लेने से मृत्यु सागर से पार हो सकते हैं।'

बालक ने माता-पिता से काशी जाकर पढ़ने की इच्छा प्रकट की। किन्तु माता ने प्रेमवश न जाने दिया। पिता को भी पता चल गया था कि मेरा पुत्र सबसे मृत्यु जीतने और शिव के दर्शन का मार्ग पूछता है। अतः उन्होंने बालक की शादी करने का विचार किया। लड़की देख ली गई। जब मूलशंकर को पता चला कि 'ये मुझे संसार के बन्धन में बांधने की सोच रहे हैं, तभी बाईस वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ मास की सायंकालीन वेला में 'घर पर कभी नहीं लौटूंगा' यह प्रतिज्ञा करके सत्य के मार्ग का पथिक बन चला।

एक यतिवय ने मूलशंकर का नाम बदल कर शुद्ध चैतन्य रखा और ब्रह्मचर्यव्रत के दण्ड, कमण्डल और काषाए वस्त्र धारण कराए। 'अग्निकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति' इस लोकोक्ति के अनुसार शुद्ध चैतन्य घर से निकल सिद्धपुर के मेले में एक भेदिये द्वारा अपने पिता जी से पकड़े जाने पर भी घर न आए और वहां ही रात्रि में सिपाहियों की दृष्टि बचाकर निकल पड़े।

आगे चल कर स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली और उन्होंने इनका नाम शुद्ध चैतन्य से स्वामी दयानन्द सरस्वती रख दिया। इन्होंने पढ़ने की भी अपनी इच्छा प्रकट की तो उन्होंने उत्तर दिया कि अब हम बहुत वृद्ध हो चुके हैं, अतः पढ़ाने में असमर्थ हैं। यदि आपकी पढ़ने की उत्कण्ठा है तो हमारे शिष्य स्वामी विरजानन्द आपकी इच्छापूर्ति करेंगे।

संन्यास दीक्षा देने के बाद स्वामी दयानन्द जी पांच वर्ष तक इधर-उधर योगियों की खोज में घूमे। जंगलों की खाक छानी, पर्वतों की गुफाएं खोज डाली, किन्तु कहीं कुछ न मिला। फिर चाणोद में शिवानन्द गिरि और ज्वालानन्दपुरी नामक दो योगी मिले। उन्होंने अहमदाबाद में स्त्रोतस्विनी तट पर दुग्धेश्वर महादेव में मिलने को कहा। स्वामी जी ने उनसे योग सीखा और स्वयं ही लिखा है कि 'वहां उन्होंने अपना प्रण पूरा किया। अपने कथनानुसार मुझे कृतकृत्य कर दिया। इन्हीं महात्माओं के प्रभाव से मुझे क्रिया समेत योग विद्या भलीभांति विदित हो गई। अतः मैं इनका अत्यन्त आभारी हूं। वास्तव में उन्होंने मुझ पर महान् उपकार किया।'

इन वाक्यों से पता चलता है कि स्वामी दयानन्द जी ने पांच वर्ष तक योग विद्या का अभ्यास किया। कुछ दिन तक अलखनन्दा की यात्रा की और तदनन्तर इधर-उधर बहुत दिनों तक भ्रमण किया।

स्वामी दयानन्द जी ने देश का भ्रमण करके देख लिया था कि इस देश की राजनैतिक अवस्था ठीक नहीं। उन्हें स्वामी विरजानन्द की याद आई। वे मथुरा की तरफ चल पड़े। वहां आकर रंगेश्वर मन्दिर में रुके। सम्वत् 1917 के प्रारम्भ में उन्होंने दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया का द्वार खटखटाया। अन्दर से आवाज आई 'कौन है?' स्वामी दयानन्द जी ने नम्र शब्दों में कहा 'भगवन्! यही जानने आया हूं।' दण्डी जी को आश्चर्य हुआ और उन्होंने समझ लिया कि अब मेरा मनोरथ पूर्ण हो जाएगा। फिर पूछा 'कुछ पढ़े भी हो?' दयानन्द जी ने सब सत्य-सत्य बतला दिया। गुरु जी का आदेश हुआ 'अच्छा यदि हमारे पास पढ़ना है तो जो कुछ पढ़े हो, उसे फेंक जाओ और जो पुस्तकें लिए हो, उन्हें यमुना में फेंक आओ, क्योंकि ये अनार्ष हैं। गुरु के आदेशानुसार उन्होंने वही किया। यति होने कारण

स्वामी विरजानन्द जी के आश्रम में उनके भोजनादि की व्यवस्था न हो सकती थी। अमर लाल नाम के गुजराती औदीच्य ब्राह्मण भक्त स्वामी जी से प्रभावित हो गए और उन्होंने विद्या प्राप्ति तक उनके भोजन की व्यवस्था कर दी। वह इतना श्रद्धालु था कि स्वामी जी को भोजन करा के ही स्वयं भोजन करता था। दो रुपये मासिक हरदेव सहाय जी दुग्धार्थ एवं चार आना श्री गोवर्धन जी रात को पढ़ने के लिए तैलार्थ देते थे। भगवान् सबकी सहायता करते हैं। वे लक्ष्मी नारायण के मन्दिर में यमुना के तट के पास रहने लगे।

'गुरोर्विद्या यस्मिन् फलति स हि शिष्य प्रियतमः' के अनुसार स्वामी विरजानन्द जी प्रिय एवं मेधावी शिष्य दयानन्द को प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुए। दयानन्द जी नियमित रूप से विद्याध्ययन के लिए आने लगे। वे चाहते थे कि गुरु जी के पास जितना ज्ञान है, वह सब संचित कर लूं और दण्डी जो यह सोचते थे कि मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब दयानन्द को सिखला दूं।

गुरु विरजानन्द जी से अष्टाध्यायी और महाभाष्य पढ़ने के बाद अब उनका समावर्तनकाल उपस्थित हो गया। उन्होंने गुरु जी की प्रिय वस्तु लौंग भेंट की। किन्तु गुरु जी ने उनसे दूसरा ही कुछ मांग लिया। वे बोले-'वत्स! मुझे किसी चीज की ज़रूरत नहीं। मैं तो केवल यह चाहता हूं कि संसार में वेद विद्या और आर्ष ग्रंथों का जीवन भर प्रचार करो।' सुनते ही ऋषि का हृदय गद्-गद् हो गया। उन्होंने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके चलने की अनुमति मांगी।

ऋषि दयानन्द ने सारा जीवन वेदों के प्रचार में लगा दिया। जगह-जगह शास्त्रार्थ करके वैदिकता का स्थापन किया, गुरुकुल खुलवाए, वैक्रमाब्द 1932 चैत्र सुदी प्रतिपदा को, सायं साढे पांच बजे, चिरगांव में चिकित्सक मणिकचन्द्र की वाटिका (बम्बई नगर) में सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना की इसके बाद अन्यत्र भी बहुत स्थलों पर आर्य समाज की स्थापना की गई। अपने जीवन में बहुत से ग्रंथ लिखे जिनमें सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और संस्कार विधि अधिक प्रसिद्ध हैं। इनके ग्रंथों का लोहा अब भी सारा विश्व मान रहा है। सत्य के प्रसार के लिए इन्हें बहुत कष्ट उठाने पड़े। इनके ऊपर पत्थर तक बरसाए गए, किन्तु आप 'आज्ञा गुरुणामविचारणीया' के सूत्र को लेकर अपने कार्य में लगे रहे।

स्वामी दयानन्द जी ने सब कुछ वेदानुकूल ही किया। सत्यवादी से झूठा ईर्ष्या करता है, इसीलिए मुसलमान, अंग्रेज और धूर्त्त उनके विरोधी बन गए। वे एक बार जोधपुर में प्रचार करने गए। नरेश यशवन्त सिंह जी ने अपने राज्य में ऋषि का बहुत सत्कार किया। एक दिन की बात है कि ऋषि दयानन्द जी राजमहल में प्रविष्ट हुए तो देखते क्या हैं कि नन्ही जान वेश्या राजमहल में है। राजा से बोले 'राजन्! राजा तो सिंह के समान होते हैं। उनका अनेक कुलों का चक्कर लगाने वाली वारागंना से क्या कार्य? इनके चक्कर में पड़ कर अधःपतन का द्वार खुल जाता है।'

नन्ही जान इन शब्दों को सुनकर तड़प उठी। उसने ऋषि के पाचक जगन्नाथ के हाथों से ऋषि जी को दूध में संखिया मिला कर पिलवा दिया। यह बात ऋषि को ज्ञात हो गई। उन्होंने जगन्नाथ को कुछ धन देकर नेपाल भाग जाने को कहा, जिससे उसकी प्राणरक्षा हो जाए। धन्य हैं दयानन्द! आप विषदाता को भी प्यार करके चले गए।

ऋषि के शरीर पर फोड़े-फुंसी निकल आये। एक महीने तक मृत्यु का सामना करते रहे। इससे पूर्व भी 16 बार उन्हें विष पिलाया गया था, जो उन्होंने न्यौली क्रिया द्वारा निकाल दिया था किन्तु इस बार विष सारे शरीर में व्याप्त हो चुका था। उन्होंने नाई को बुलाकर क्षौर करवाया। गीले कपड़े से शरीर पोंछा। अपने कमरे की सब खिड़कियां खुलवा दीं। सबको बाहर जाने का आदेश दिया। महीना, पक्ष, तिथि और वार पूछे। पाण्ड्या मोहन लाल जी ने नम्र शब्दों में कहा-'भगवन्! सम्वत् 1940 विक्रमी का कार्तिक, कृष्णपक्ष, अमावस्या और मंगलवार है।' ऋषि ने दृष्टि चारों तरफ घुमाई और वेदों के मन्त्र उचारण किये, गायत्री का जाप किया, आंखें खोलीं और बोले-'हे ईश्वर! तेरी यही इच्छा थी। तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला की। तदनन्तर ओ३म् नाद के साथ प्राणों को बाहर निकाल दिया और प्रकाश पुंज सदा-सर्वदा के लिए हमें एक महान् दीप देकर हमारे बीच से चले गए। दीपावली के दिन हजारों दीपक जलाये गये, परन्तु उस महान् दीपक के बिना-महान् अग्नि के बिना सब तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देता था।

अन्तिम दृश्य को पं० गुरुदत्त विद्यार्थी देख रहे थे। वह उस ऋषि के देदीप्यमान मुखमण्डल को देखकर नास्तिक से आस्तिक बने गए। धन्य है महापुरुषों का जीवन। अपने अन्तिम समय भी असत्य से युद्ध किया और उस पर विजय प्राप्त की।

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

सारे संसार का कल्याण करने वाले उस परमपिता परमात्मा को बार-बार नमस्कार।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित-1911)

**आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर**

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्वल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	सुशील पुरी	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

ओ३म् इन्द्रायेन्द्रो परिस्त्रव।

ऋग्वेद 7,113,7

मेरा मन ज्योतिर्मान प्रभु की ओर प्रवाहित हो तथा परमानन्द की प्राप्ति करें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर दोआबा

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. उच्च स्तर की पढ़ाई।

2. मेहनती व अनुभवी स्टाफ।

3. शिक्षा के क्षेत्र में उच्च स्थान।

4. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।

5. शिक्षा में देशभक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

❖❖❖

नये सत्र में अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

देशबन्धु भल्ला	**विनोद भारद्वाज**	**तरणप्रीत कौर**
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापति।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥ (यजुर्वेद 32/5)

हे सर्वोत्कृष्टेश्वर! आप आनन्दस्वरूप और आनन्ददाता हैं, विज्ञानमय और विज्ञानप्रद हैं, सब संसार के अधिष्ठाता और ऐश्वर्य दाता हैं, परमपवित्र और अनन्त बलवान हैं, सब के धारण पोषण करने वाले हैं, कृपा करके हम को ऐसी बुद्धि दें कि जिससे हम सर्वविद्या सम्पन्न हों, यह हमारी बारम्बार प्रार्थना है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख–रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।

☆☆☆☆

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

☆☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

विनोद भारद्वाज	**एस.के.बरूटा**	**डा.संजीव डाबर**
प्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

नाप्राप्यमभिवांछन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।

आपत्सु च न मुहयन्ति नराः पण्डित बुद्धय्॥

जो मनुष्य प्राप्त होने के अयोग्य पदार्थों की कभी इच्छा नहीं करते अदृश्य व किसी पदार्थ के नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर शोक करने की अभिलाषा नहीं करते और बड़े–बड़े दुःखों से मुक्त व्यवहारों की प्राप्ति में भी मूढ़ होकर नहीं घबराते, वे मनुष्य पंडितों की बुद्धि से युक्त कहाते हैं। (व्यवहारभानु)

– महर्षि दयानन्द

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।
3. अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।
4. आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश
5. भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	**विनोद भारद्वाज**	**जिया लाल शर्मा**	**आरती कालिया**
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।

उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	**विनोद भारद्वाज**	**ललित कुमार शर्मा**	**अचला भल्ला**	**अमित सभ्रवाल**
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तंमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दु:ख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- **महर्षि दयानन्द**

◆◆◆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार वूमैन , नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

◆◆◆

डा.सी.एम.भंडारी	विनोद भारद्वाज	डा. मीनाक्षी शर्मा	गुरविन्द्र कौर
प्रधान	उप प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

राष्ट्र च रोह द्रविणं व चरोह (अथर्व. 13/1/34)

सुख के लिये राज्य और धन को बढ़ाओ।

★★★

***महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के* शुभ अवसर पर**

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

नये सत्र में अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

डा. एस.एम.शर्मा
सैक्रेटरी

सूक्ष्म आहलूवालिया
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! तेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुए का व सोते हुए का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

***महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के* शुभ अवसर पर**

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

अरुण थापर	**रवि महाजन**	**श्रीमती राजेश शर्मा**	**राकेश अरोडा**
प्रधान	**उप प्रधान**	**मैनेजर**	**कार्यकारी प्रिंसीपल**

॥ ओ३म् ॥

वेद शास्त्रों को पढ़ने वाला व्यक्ति निर्धन भी अच्छा है परन्तु शास्त्र के अध्ययन से रहित और आचरणहीन मनुष्य धनवान भी अच्छा नहीं। सुन्दर नेत्रों वाला फटे पुराने कपड़ों में भी सुन्दर लगता है परन्तु नेत्रहीन सोने के गहनों से सजा हुआ भी शोभित नहीं होता है।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य गर्ल्ज सीनियर सै.स्कूल

पुराना बाजार, नजदीक दरेसी मैदान, लुधियाना

विद्यालय के विशेष आकर्षण

1. अंग्रेजी व हिन्दी मीडियम में शिक्षा।
2. उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
3. बढ़िया बोर्ड परीक्षा परिणाम।
4. खुले व हवादार कमरे।
5. सांस्कृतिक गतिविधियां।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. गरीब एवं योग्य छात्राओं को छात्रवृत्तियां व वर्दियों का प्रबन्ध।
8. कॉमर्स एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल में स्वच्छ जल के लिये फिल्टर्ज की व्यवस्था।
10. जरूरतमंद छात्राओं के लिये वर्दियों और स्वैटरस वितरण।
11. प्रतिवर्ष बच्चों की भलाई और कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

दिनेश बजाज	**वजीर चंद**	**रणवीर शर्मा**	**किरण बजाज**
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म्॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।

शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ– हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से दसवीं कक्षा तक इंग्लिश/हिन्दी मीडियम, पंजाब पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विशाल एवं हवादार कमरे।
6. शहर के मध्य में स्थित।
7. बढ़िया फर्नीचर।
8. खुला मैदान।
9. शानदार परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

अरुण सूद
प्रधान

श्रीमती राजेश शर्मा
वरिष्ठ उप प्रधान

अमित सूद
प्रबन्धक

विश्वनाथ जोशी
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर।

सैंकड़ों हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से शुभ कार्यों में खर्च करो।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

दयानन्द आदर्श विद्या पब्लिक स्कूल लुधियाना

1. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
4. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
5. वैदिक शिक्षा व साप्ताहिक हवन यज्ञ।
6. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

❖❖❖

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

❖❖❖

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये, उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

❖❖❖

अरुण सूद	श्रीमती राजेश शर्मा	मेधा शर्मा
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विद्या:- जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्य-विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम 'विद्या' है। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व

के शुभावसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित क्षेत्र की एक मात्र अग्रणी नारी शिक्षण संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

यू.जी.सी. एक्ट 1956 के सेक्शन **2 (F) & 12 (B)** से सम्बद्ध

नैक **(NAAC)** द्वारा ग्रेड **"B"** सी.जी.पी.ए. 2.61 से प्रत्यापित संस्था

में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन बरनाला +1, +2 एवं महाविद्यालय

में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विभिन्न कक्षाओं, विषयों व कोर्सों के शिक्षण की सुचारू व्यवस्था।

स्नातक शिक्षण कक्षाएं व कोर्स

बी.ए. :- हिन्दी साहित्य, पंजाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, लोक प्रशासन, कम्प्यूटर साईंस, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, फैशन डिजाइनिंग

- ❐ बी.कॉम
- ❐ बी.एस.सी. (मैडीकल/ नॉन मैडीकल)
- ❐ बी.सी.ए.
- ❐ बी.बी.ए.

यू.जी.सी. प्रदत्त बी.वॉक कोर्स:

- ❐ साफ्टवेयर डेवलेपमेंट
- ❐ फैशन डिजाइनिंग

स्नातकोत्तर शिक्षण कक्षाएं व कोर्स:

- ❐ एम.ए.पंजाबी
- ❐ एम.ए. इतिहास
- ❐ एम.एस.सी. (आई.टी.)
- ❐ एम.एस.सी. (एफ.टी.)
- ❐ पी.जी.डी.सी.ए.

विशेषताएं:-

- ❐ वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय
- ❐ बहुद्देश्यीय विशाल सभागार एवं इन्डोर स्पोर्ट्स हॉल।
- ❐ सुविधा सम्पन्न छात्रावास।
- ❐ वाई फाई प्रांगण।
- ❐ सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।
- ❐ उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।
- ❐ आधुनिक साधन सम्पन्न विज्ञान प्रयोगशालाएं
  - ❐ भौतिक विज्ञान
  - ❐ रसायन विज्ञान
  - ❐ जीव विज्ञान
- ❐ स्वच्छ व स्तरीय कैंटीन व मैस
- ❐ जैनरेटरों व वाटर कूलरों (आर.ओ.) की व्यवस्था
- ❐ विभागीय कक्ष
- ❐ गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।
- ❐ एन.सी.सी.,एन.एस.एस.,यूथक्लब, रैड रिब्बन का सुचारू प्रबन्ध।

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा.सूर्यकांत शोरी	**केवल जिन्दल**	**भारत भूषण मेनन**	**डा.नीलम शर्मा**
प्रधान	महासचिव	वरिष्ठ उपप्रधान	प्रिंसीपल

॥ओ३म्॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के

पावन पर्व पर

☆☆☆

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को

हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :–

- सभी कक्षाओं के शत–प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह–क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध। नये सत्र में बच्चों के दाखिला के लिये सम्पर्क करें।

संजीव शौरी
प्रधान

सूर्यकान्त शोरी
उप प्रधान

केवल कृष्ण जिन्दल
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

राज महेन्द्र
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

मुक्ति के साधनः- अर्थात् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना तथा धर्म का आचरण, पुण्य का करना, सत्संग, तीर्थ सेवन, विश्वास, सत्पुरुषों का संग, परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना और सब दुष्ट कर्मो से अलग रहना है, ये सब 'मुक्ति के साधन' कहाते हैं। महर्षि दयानन्द

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई

❐ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❐

- ■ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के मार्ग दर्शन में बरनाला जिले में अग्रणी शिक्षा संस्था।
- ■ समय पालन, सामाजिक सहयोग, देश प्रेम, पारस्परिक सद्भाव तथा विश्वास, उत्तरदायित्व की भावना, अनुशासन तथा धर्म और संस्कृति के प्रति आदर का पाठ्यक्रम में समावेश।
- ■ कम्प्यूटर शिक्षा, संगीत शिक्षा, क्रीड़ा प्रतियोगिताएं, शैक्षणिक भ्रमण, समृद्ध प्रयोगशाला, समृद्ध पुस्तकालय, खुले हवादार कमरे, वाटर कूलर, जैनरेटर तथा प्राथमिक सहायता की सुविधा।

☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

संजीव शोरी
प्रधान

भारत मोदी
मैनेजर

राम कुमार सोबती
सैक्रेटरी

वन्दना गोयल
कार्यकारी प्रिंसीपल

अनीता मित्तल
डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः स्याम शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥१॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तथा मैडीकल, नॉन मैडीकल तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।
8. आधुनिक लैब, साईंस ग्रुप +1, +2 के लिये उपलब्ध।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"नये सत्र में अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

अनिल कुमार — प्रधान

सुरेन्द्र गर्ग — मैनेजर/कारस्पोडेंट

सुषमा कुमारी — प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय,धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।
(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व ऋषि बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै.स्कूल, बठिंडा

विशेषताएं:

Ph.No.0164-2238328

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, आर.ओ.पानी, आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

अश्विनी कुमार मोंगा
प्रधान

गौरी शंकर
वरिष्ठ उप प्रधान

श्रीमती ऊषा गोयल
संरक्षक

सुरेन्द्र गर्ग
सचिव

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

जीव का रहस्य:- जो चेतन, अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख और ज्ञान-गुण वाला तथा नित्य है, वह 'जीव' कहाता है।

(महर्षि दयानन्द)

ऋषि जन्म दिवस व बोध दिवस के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं वैदिक कन्या पाठशाला

औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. कम्प्यूटर लैब का उचित प्रबन्ध।
5. पुस्तकालय की सुविधा।
6. साफ-सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
7. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
8. सांस्कृतिक आधार।
9. बिजली के पंखे तथा शीतल पेयजल का प्रबन्ध।
10. शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
11. नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**अशोक कुमार अग्रवाल**	**विजय अग्रवाल**	**नीरू शैली**
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पुरुषार्थ:-अर्थात् सर्वथा आलस्य छोड़ के उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिये मन, शरीर,वाणी और धन से जो जो अत्यन्त उद्योग करना है, उसनको 'पुरुषार्थ' कहते हैं। **(महर्षि दयानन्द)**

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

(Affiliated to P.S.E.B)

❖❖❖

■ प्रमुख विशेषताएं ■

1. शत प्रतिशत बोर्ड परिणाम।
2. सुयोग्य और अनुभवी स्टाफ।
3. शिक्षा का आधुनिक ढंग।
4. हिन्दी, अंग्रेजी व पंजाबी माध्यम।
5. उच्च शिक्षा, कम शुल्क।
6. प्राकृतिक वातावरण।
7. खुले व हवादार कमरे।
8. बड़ा खेल का मैदान।
9. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा. वीरेन्द्र कौशिक
प्रधान

नरेन्द्र कुमार
मैनेजर

चन्द्रमोहन कौशल
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अविद्या:- जो विद्या से विपरीत है, भ्रम, अंधकार और अज्ञानरूप है, इसलिये इसको 'अविद्या' कहते हैं।
(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❒ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह–विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत–प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सोमप्रकाश	**शैलेन्द्र मेहरा**	**किरण जिन्दल**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरिताद्वाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

❋❋❋

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

❋❋❋

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

❋❋❋

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व
शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के
विकास के लिये निरन्तरकार्यरत,
नैतिक शिक्षा पर
विशेष बल।

❋❋❋

नए सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य
और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये
सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीनू सलूजा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां, जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये ,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

राज कुमार प्रधान | **सुदेश कुमार** मैनेजर | **श्रीमती सारिका** प्रिंसीपल

॥ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल सी.सै. स्कूल मोगा

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य, चरित्र निर्माण और सर्वतोमुखी विकास के लिये सेवा का अवसर दें।

❐ विशेष आकर्षण ❐

1. सुसज्जित भवन, खुले हवादार कमरे।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. हाई पावर विद्युत जनरेटर, शुद्ध एवं शीतल पेयजल।
4. आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, स्मार्ट कक्षाएं व यंत्रों से लैस साईंस व गणित प्रयोगशाला।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों का विद्यालय में उचित प्रबन्ध।
6. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
7. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
8. नैतिक शिक्षा की कक्षाओं का आरम्भ शीघ्र।
9. खेलों का उचित प्रबन्ध।
10. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
11. वैदिक शिक्षा व साप्ताहिक हवन यज्ञ।
12. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सत्यप्रकाश उप्पल
प्रधान

नरेन्द्र सूद
मैनेजर

अनिल गोयल
सैक्रेटरी

समीक्षा शर्मा
प्राचार्य

॥ ओ३म् ॥

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर।

सैंकड़ों हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से शुभ कार्यों में खर्च करो।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव

के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल मोगा

1. आर्य समाज की विचारधारा एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संदेशों के प्रचार व प्रसार को समर्पित संस्था।
2. विशाल शानदार, हवादार इमारत एवं खेल के मैदान की व्यवस्था।
3. जनरेटर, वाटर कूलर, साफ पानी के लिये आर.ओ. की उत्तम व्यवस्था।
4. नर्सरी से 10+2 (आर्ट्स एवं कामर्स) तक पढ़ाई का समुचित प्रबन्ध।
5. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त सुयोग्य अध्यापकगण।
6. कम्प्यूटर शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, योग एवं खेलों पर जोर।
7. औपचारिक शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
8. लड़कियों एवं गरीब वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष सुविधाएं।
9. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं एवं घरेलू परीक्षाओं में शानदार परिणाम।

❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये, उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

❖❖❖

बोध राज मजीठिया	**नरेन्द्र सूद**	**अनीता सिंगला**
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ओ३म्॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयों को, दुरवस्थाओं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

डा. एस.एम.शर्मा
सैक्रेटरी

॥ओ३म्॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

-महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के पावन अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा

❒ विशेषताएं ❒

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा

मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

डा. एस.एम.शर्मा
सैक्रेटरी

सोनिया कलसी
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पति वाचं नः स्वदतु ॥ (यजु. 30/3)

हे परमात्मा! सबको सत्कर्म करने और सत्कर्मों का संरक्षण करने की बुद्धि दो। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाले ज्ञानी से हम सब ज्ञान को पवित्र करें। उत्तम वक्ता द्वारा हम सब वाणी को मधुर बनाएं, जिससे हम सबकी उन्नति हो

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी .एम कालेज आफ एजुकेशन मोगा

❒ ***आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर*** ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।

2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।

3. गत वर्षों की उज्वल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।

5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।

6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।

7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

डा.एस.एम.शर्मा
सैक्रेटरी

डा. आशिमा भंडारी
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये, त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह् रूतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम, शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।

हे श्रेष्ठ पुरुषो। आप हमें दुखों से बचाने के लिये अधिकारपूर्वक उत्तम उपदेश सुनाओ। हे विद्वानों हम दु:ख प्रगति में जब पड़ें तब आप दुखियों की सच्ची टेर सुनने वाले हमारे दुख सुन कर हमारा त्राण करो। अपनी रक्षा और कल्याण के लिये हम दुखी जन आपको पुकारते हैं।

❖

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस और बोध पर्व के अवसर पर
आर्य बन्धुओं व मातृ शक्ति को
हार्दिक शुभ कामनाएं

❖

आर्य समाज, बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर

❖❖❖❖❖❖

धार्मिक व सामाजिक कार्यों में आर्य समाज को अपना सहयोग दें, साप्ताहिक आर्य मर्यादा पढ़ें, आर्य मर्यादा के सदस्य बनें। यह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र है।

दैनिक व साप्ताहिक सत्संगों में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

शशि कोमल	**पी.के. त्रिपाठी**	**पवन टंडन**
प्रधान	**उप प्रधान**	**महामन्त्री**
संजय कुमार		**डा. रविकांत शर्मा**
मंत्री		**कोषाध्यक्ष**

इस कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ऊपर एवं नीचे कार्यक्रम में भाग लेते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के माननीय प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी, आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट एवं अन्य।

रजि. नं. पी.बी./जेएल—011/2021-23 RNI No. 26283/74

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के महोत्सव दो वर्ष तक चलने वाले कार्यक्रम का शुभारम्भ भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 12 फरवरी, 2023 को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम नई दिल्ली में किया गया। कार्यक्रम से पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी बच्चों का अभिवादन स्वीकार करते हुये। साथ में पीछे उपस्थित जनसमूह।

E-mail: aryapunjab2018@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org